Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सए सए उवट्ठाणे,
सिद्धिमेव ण अन्नहा।

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैंअपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 43 • 31 जुलाई -6 अगस्त, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-07-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

जीवन में मोह, माया व अहंकार से बचें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), २३ जुलाई, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, धर्मगुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती आगम में कहा गया है कि जैन दर्शन में आत्मवाद एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। आत्मवाद से जुड़ा दूसरा सिद्धांत है–कर्मवाद। ये जैन दर्शन के दो महास्तंभ है। आत्मा के बारे में अच्छी जानकारी इनसे प्राप्त हो सकती है।

कर्मवाद का एक सिद्धांत है कि कर्म बंध दो प्रकार का होता है–ऐर्यापथिक बंध और सांप्रदायिक बंध। ऐर्यापथिक बंध केवल योग से होता है। कषाय रहित योग से बंधने वाला यह कर्म होता है। यह वीतराग के ही होता है। वीतराग दो प्रकार के होते हैं–उपशांत मोह वीतराग और क्षीण मोह वीतराग।

क्षीण मोह वीतराग बारहवें गुणस्थान से शुरू होता है। तीन प्रकार के वीतराग उपशांत मोह सहित वीतराग, क्षीण मोह वीतराग और सयोगी केवली वीतराग। पथिक बंध ११-१२-१३वें गुणस्थान में ही होते हैं। १४वाँ गुणस्थान तो अवबंध है। इससे केवल सात वेदनीय कर्म का ही बंध होगा। पहले समय बंधा, दूसरे समय में उदय में आया और भोगा, बस इतना सा हल्का-फुल्का होता है।

सांप्रदायिक बंध पहले से दसवें गुणस्थान तक सकषाय अवस्था में होता हो। सकषायी अवस्था में आठों कर्मों का बंध होता है। ११-१२-१३वें गुणस्थान के मनुष्य को छोड़कर सभी संसारी जीवों के होता है। प्रकृति और प्रदेश का संबंध योग से और अनुभाग व स्थिति कषाय से संबंधित है। संसार भ्रमण का कारण सांप्रदायिक बंध ही होता है। हमारा कषाय शांत रहे, पतला पड़े तो सांप्रदायिक बंध भी हल्का होता है। कषायों को प्रतनू या उनका अल्पीकरण करने का प्रयास हो। सांप्रदायिक बंध को कम करने का प्रयास करें।

गृहस्थ हिंसा, चोरी, झूठ बोलने, झूठे आरोप लगाने से बचें। माया-अहंकार से बचें। १८ पापों से बचने का प्रयास करें तो पाप के रूप में सांप्रदायिक बंध से बच सकते हैं। धर्म की साधना करें। सदाचार, सादा विचार मन में रहें। हम अबंध अवस्था को प्राप्त करें, ऐसा प्रयास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हम मोह को कैसे कम करें। कर्म के चार कार्य होते हैं–आवारक, विकारक, प्रतिघात और अशुभ व संयोग के निमित्त। मोहकर्म कर्मों का सेनापति है। मोह कर्म का विनाश होने पर ही हम आगे प्रगति कर सकते हैं। मोह के कारण ही आसक्ति व ममत्व है, अवैराग्य भाव है। जगत को अंधा कराने वाला मोह कर्म है। मोह कर्म से ही सावद्य प्रवृत्तियाँ होती हैं।

संजयराज सेमलानी एवं विजया देवी धाकड़ ने २३ की तपस्या के पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

'उत्थान' आध्यात्मिक क्रार्यक्रम के मंचीय कार्यक्रम में मदनलाल तातेड़ तथा रतनलाल सियाल ने इसकी जानकारी दी।अनेक जैन-अजैन परिवार इससे जुड़े हैं। मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी ने विशेष श्रम करके उत्थान के माध्यम से जागृति लाने का प्रयास किया है।

मुनि जागृत कुमार जी ने इसके उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। अनेक प्रयोगों से लोगों को जोड़ने का प्रयास किया गया। विशेषकर युवाओं, बच्चों को धर्मसंघ की जानकारी दी गई। चिराग देसाई ने वीडियो से इसकी जानकारी दी। उत्थान टीम ने संवाद से इसकी प्रस्तुति दी।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने बताया कि बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० मुनिश्री महेंद्र कुमार जी ने समाज में जागृति लाने का प्रयास किया। उत्थान शब्द के महत्त्व को समझाया। हर समाज के लोगों को इसके माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया। हर क्षेत्र के लोगों से इसके माध्यम से संपर्क किया गया।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि उत्कर्ष और उत्थान किस दिशा में हो यह महत्त्वपूर्ण है। किसी भी काम को शुरू करने के लिए उत्थान होता है, तो उसमें गति आ सकती है। अनेक लोग इससे जुड़े हैं। जीवन में जब तक वीतराग न बन जाए, उत्थान होता रहे।

प्रवचन के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ जी की कृति के अंग्रेजी संस्करण New day new thought का लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सबके प्रति विनय भाव रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), २० जुलाई, २०२३

अध्यात्म जगत के भास्कर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के ८वें शतक के ८वें उद्देशक में कहा गया है कि गौतम स्वामी ने प्रश्न किया कि गुरु की अपेक्षा कितने प्रत्यनीक बताए गए हैं। उत्तर दिया गया कि गुरु की अपेक्षा तीन प्रत्यनीक हैं–आचार्य प्रत्यनीक, उपाध्याय प्रत्यनीक व स्थविर प्रत्यनीक।

प्रत्यनीक यानी प्रतिकूल, विरुद्ध, अविनीत। गुरु का अर्थ बड़ा भारी होता है। जो गुणों से बड़ा-भारी हो गया है। गुरु के तीन प्रकार हो जाते हैं–आचार्य, उपाध्याय और स्थविर। जैन शासन में तो आचार्य बहुत ऊँचे पद पर होते हैं। तेरापंथ में तो आचार्य सर्वेसर्वा होते हैं। उपाध्याय पद भी अलग नहीं है। आचार्य में ही उपाध्याय पद समाहित है। कई आचार्य या साधु भी स्थविर हो जाते हैं।

जो साधु आचार्य की सेवा से कतराता है वह आचार्य का प्रत्यनीक होता है। वह दुर्भावना से आचार्य का छिद्र देख गलत बात प्रवाहित करता है। सम्मान नहीं करता, उद्दंडता का भाव होता है। इसी तरह जहाँ उपाध्याय होते हैं, उनका अविनय करने वाला, सेवा न करने वाला उपाध्याय प्रत्यनीक हो जाता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 जुलाई - 6 अगस्त, 2023

✦ *मध्यम कोटि की कामना वाला व्यक्ति दूसरों के अनिष्ट की इच्छा तो नहीं करता, किंतु अपने लिए भौतिक आकांक्षा करता है। लोक व्यवहार में इसे बुरा भी नहीं माना जाता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

दान में भावना का महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), १६ जुलाई, २०२३

तीर्थंकर समवसरण में तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वादन करवाते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के आठवें शतक में कहा गया है कि राजगृह नगर में गुणशीलक नामक चैत्य के आसपास अन्य धर्मी लोग रहते थे। भगवान महावीर का वहाँ चातुर्मास होता था और अनेक स्थविर साधु भी उनके साथ विचरण करते थे।

एक बार अन्य तीर्थी साधु स्थविरों के पास आकर बोले कि आप लोग असंयमी हैं। साधुओं ने पूछा कि किस कारण से आप यह कह रहे हैं? वे लोग बोले आप अदत्त को लेने वाले हो। स्थविर बोले–हम अदत्त कब लेते हैं, कब खाते हैं। अन्य धर्मी बोले कि गृहस्थ आपको कोई दान दे रहा है, पर जब तक वह वस्तु आपके पात्र में गिरी नहीं। तब तक वो आपकी नहीं है। बीच में किसी ने उसे चुरा लिया तो वह अदत्त हो जाती है। इसलिए आप अदत्त ग्रहण करते हो।

स्थविर बोले–हमारा सिद्धांत अलग है। हम अदत्त नहीं दत्त को ग्रहण करने वाले हैं। वे लोग बोले वो दत्त कैसे हुई? स्थविर बोले–गृहस्थ ने देना शुरू कर छोड़ दिया, हम उसे दत्त ही मानते हैं। बीच में कोई छीन ले तो उसने साधु की चीज की चोरी की है। गृहस्थ की वह चीज नहीं रही। उसने तो दान देने के लिए उसे उठाया था। अतः उसकी वह क्रिया तो दत्त ही गई। अदत्त तो आप लोग लेने वाले हो। उस समय कितनी सूक्ष्मता से ध्यान देते थे। वह चीज दतादत्त है अपेक्षा से।

यहाँ भावना का महत्त्व है। दान देने वाले ने देने की भावना से छोड़ा है। साधु भावना से ले रहा है, वह निर्दोष है, अदत्त नहीं है। इस तरह उस समय अन्य तीर्थी अनेक चर्चाएँ करते थे। चर्चा में आग्रह न हो तो निष्पत्ति निकल सकती है। कई वर्षों पहले जैन शासन के अनेक संप्रदायों में भी चर्चाएँ होती थीं। चर्चा में राग-द्वेष न हो। ज्ञान वृद्धि का लक्ष्य हो तो कुछ नया जाना जा सकता है।

अणुविभा के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान चेतना संगोष्ठी का आयोजन परम पूज्य की सन्निधि में हुआ। परम पावन ने आशीर्वचन फरमाया कि जीवन विज्ञान उपक्रम, परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय शुरू हुआ था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का पथ-दर्शन भी मिला है। वर्तमान में जीवन विज्ञान का स्थान बदल गया है, पर तत्त्व वह ही है। तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े हुए संस्थान हैं, वहाँ पर इस पर चिंतन-मंथन हो सकता है। जैनिज्म पर भी वहाँ बात आए।

पर्युषण के समय स्कूल में भगवान महावीर के बारे में बताया जाए। धर्म की जानकारी दी जा सकती है। जैन दर्शन पढ़ने से जानकारी मिल सकती है। महावीर जयंती पर भी जानकारी दी जा सकती है। तेरापंथ के दर्शन की भी जानकारी दी जाए। तेरापंथ स्थापना दिवस, भिक्षु चरमोत्सव पर जानकारी दी जा सकती है।

जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आएँ। चाहिए क्या व जरूरी क्या? उसे समझाएँ। आज जो चिंतन-मंथन हो सके अच्छी बात है। प्रकृति तो व्यापक है, उसका अपना कार्य हो सकता है।

जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, सरदारशहर के राजेंद्र विद्यालय के पृथ्वी सिंह बीदावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आ०म०च० व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने २०२४ के वासी मर्यादा महोत्सव के स्वागताध्यक्ष के रूप में सरदारशहर निवासी चांदरतन दुगड़ के नाम की घोषणा की। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। २१ रंगी तपस्या के तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने निर्जरा के १२ भेदों को विस्तार से समझाया।

सबके प्रति विनय भाव...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

स्थविर तीन प्रकार के होते हैं–जाति स्थविर, श्रुत स्थविर, पर्याय स्थविर। उनकी अवहेलना और सेवा न करने वाला स्थविर प्रत्यनीक हो जाता है। भगवती सूत्र में अनेक प्रकार के प्रत्यनीक के वर्ग बताए गए हैं। प्रत्यनीक से हम प्रेरणा लें कि हम प्रत्यनीक न बन जाएँ। साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविका कोई भी हो, हमारे से अविनय न हो जाए। गुरुदेव तुलसी तो २२ वर्ष के आचार्य बन गए थे, पर मगन मुनि जैसे वरिष्ठ संत उनको बहुत मान-सम्मान देते थे।

बड़े संतों द्वारा विगय होता तो गुरुदेव तुलसी रत्नाधिक साधुओं को मान-सम्मान देते थे। हमारे धर्मसंघ में गुरु की गरिमापूर्ण मान-सम्मान की परंपरा रही है। शासन समुंद्र है, कई तरह की चीजें मिल सकती हैं। हम अच्छा बनने का प्रयास करें।

महामनीषी ने कालू यशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए मुनि तुलसी के बड़ा गुड़ा में पूज्य कालूगणी के साथ हुए संवाद को समझाया। बढ़ रही बहु विस्तार धार सीख धीरज मने।

मुनि तुलसी ने मगन मुनि के कहने पर वापस दोहा सुनाया–महर रखो महाराज, नरव चाकर पद कमल लो। सीख अपो सुखदाय, जिस जलदी शिव गति लहूं।। इसी तरह चतराजी के गुड़ा में भी सोरठिया से संवाद हुआ।

पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तपस्या के तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने सम्यक् दर्शन को विस्तार से समझाया।

✦ *वे व्यक्ति महान् होते हैं, जो दूसरों की भलाई के लिए स्वयं कष्ट झेलने के लिए तत्पर रहते हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली।

खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा के प्रांगण में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में १०८ दंपति एवं कुल २५४ भाई-बहनों ने भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान कया। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि यह स्तोत्र जैन परंपरा में सर्वमान्य स्तोत्र है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराएँ श्रद्धा एवं भक्ति से प्रातःकाल के पुण्य समय में इसका स्मरण करते हैं। इसका एक-एक श्लोक मंत्र गर्भित है। शब्द संयोजना चामत्कारिक है। अनेक प्रकार के लाभ इसके द्वारा उपलब्ध होते हैं। बीदासर निवासी श्रावक चंपालाल का प्रसंग बताया।

शासनश्री साध्वी सुव्रतां जी ने कहा कि जहाँ जीवन वहाँ समस्याएँ, निश्चित आती है। शारीरिक, मानसिक, भूगोल-खगोल ग्रहकृत एवं परिस्थितिकृत पर हमारे दूरगामी चिंतन के धनि आचार्यों ने अनेकानेक स्तोत्र स्तव स्तुति मंत्रपरक दिए हैं। जिनके द्वारा प्रत्येक समस्या का सागर तिरा जा सकता है। उन स्तोत्रों में सर्वाधिक प्रभावशाली भक्तामर स्तोत्र है। जो आचार्य मानतुंग द्वारा विरचित है। जिनका शरीर लोहमयी सांकलों से बांध दिया गया था। वे स्तोत्र पाठ से तड़ातड़ टूट गई थी।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बिमल बैंगानी, पीतमपुरा सभा के अध्यक्ष प्रवीण बैंगानी एवं मंत्री सुरेंद्र मालू ने परमेष्ठि स्तवन से किया।

साध्वीवृंद ने गीत का सुमधुर स्वरों में संगान किया। साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने समग्र भक्तामर का खड़े-खड़े सुस्वरों में समुच्चारण किया। साथ में सभी अनुष्ठानकर्ताओं ने अपने एक स्वर मिलाए। पीतमपुरा सभा की उपाध्यक्षा व कार्यक्रम संयोजिका मनफूल देवी बोथरा ने आभार एवं समागत भाई-बहनों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन पीतमपुरा सभा के मंत्री सुरेंद्र मालू ने किया।

शालीमार बाग, शास्त्रीनगर, मानसरोवर गार्डन, त्रिनगर, अरिहंत नगर, कीर्तिनगर, राजेंद्रनगर आदि कई क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएँ इस अनुष्ठान में संभागी बने। दिल्ली महिला मंडल, तेयुप के सदस्यों की भी विशेष रूप से उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप के सत्र-२०२३-२४ की नई कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह शांति निकेतन में आयोजित हुआ। तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा ने संपूर्ण टीम की घोषणा की। किशोर मंडल संयोजक नीरज बोथरा ने कार्यसमिति का उल्लेख किया।

नमस्कार महामंत्र, मंगल भावना पत्रक की स्थापना और मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ युवक रत्न राजेंद्र सेठिया, धर्मेन्द्र डाकलिया,देवेंद्र डागा, भरत गोलछा, पीयूष लूणिया और विनीत बोथरा ने कार्यक्रम संपन्न करवाया। राजेंद्र सेठिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष अरुण नाहटा और संपूर्ण टीम को शपथ दिलवाई।

जैन लूणकरण छाजेड़, अमरचंद सोनी और कविता चोपड़ा ने मंगलकामना प्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष ने भविष्य की योजनाओं के लिए सभी को सार्थक कदम प्रवर्धमान करने का संकल्प दिलाया।

तेयुप, गंगाशहर के पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं व नई टीम को आशीर्वाद मंत्र से साध्वीश्री जी ने वर्धापित किया। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र डागा ने किया।

विशेष सूचना

- अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स में समाचार भेजने हेतु abtyptt@gmail.com पर मेल करें। **ई-मेल पर भेजे हुए समाचारों को ही प्राथमिकता दी जाएगी।**
- ऑनलाइन तेरापंथ टाइम्स की निःशुल्क प्रति मँगवाने हेतु प्रकाशन प्रभारी जितेंद्र परमार–9757398219 को अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नंबर ओर ई-मेल भेजें / व्हाट्स एप्प पर ही भेजें, कॉल नहीं करें।
- तेरापंथ टाइम्स के प्राप्त नहीं होने संबंधित शिकायत हेतु प्रकाशन प्रभारी **जितेंद्र परमार–** 9757398219 या अमित सेठिया 9824300012 से संपर्क करें।

दिनेश मरोठी
94800048066
कार्यकारी संपादक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

मुंबई में आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में आयोजित उपासक शिविर-२०२३ में चयनित नए उपासकों के नाम

क्रम	नाम	स्थान
(१)	अशोक बरलोटा	मुंबई
(२)	चंद्रप्रकाश जैन	सवाई माधोपुर
(३)	दिनेश बाफना	मुंबई
(४)	कमलेश रांका	मुंबई
(५)	लक्ष्मीलाल सिंघवी	मुंबई
(६)	मनीष छल्लानी	दिल्ली
(७)	राहुल डांगी	मुंबई
(८)	सूर्यकिरण जैन	उल्लहास नगर
(९)	तरुण गुंदेचा	मुंबई
(१०)	बबीता पुगलिया	सैंथिया
(११)	भाग्यश्री सूर्या	मुंबई
(१२)	भारती रांका	दिल्ली
(१३)	हंसा संचेती	दिल्ली
(१४)	हेमा दुगड़	कोलकाता
(१५)	हेमलता कोठारी	मुंबई
(१६)	इंद्र मांडोत	करवड़
(१७)	जयश्री सेठिया	लुधियाना
(१८)	जयंती सिंघी	सूरत
(१९)	झनकार तलेसरा	मुंबई
(२०)	ज्योति मेडतवाल	सूरत
(२१)	कनक देवी बुच्चा	दिल्ली
(२२)	कुसुम बड़ाला	मुंबई
(२३)	कुसुम हिरन	मुंबई
(२४)	ललिता जैन	सवाई माधोपुर
(२५)	लक्ष्मी सिंघवी	सूरत
(२६)	ममता कच्छारा	मुंबई
(२७)	मंजु बैद	लुधियाना
(२८)	मंजु झाजेड़	भूसावल
(२९)	मंजु रांका	मुंबई
(३०)	मार्गी खांनडोर	मुंबई
(३१)	मीना बड़ाला	मुंबई
(३२)	मीना धींग	मुंबई
(३३)	मीना मेडतवाल	मुंबई
(३४)	नंदा बांठिया	बैंगलोर
(३५)	फूल श्यामसुखा	लुधियाना
(३६)	पिंकी संकलेचा	सूरत
(३७)	पूजा पुगलिया	लुधियाना
(३८)	प्रवीन मरलेचा	पुणे
(३९)	प्रीति रांका	मुंबई
(४०)	पुष्पा सालेचा	सूरत
(४१)	पुष्पा सिंघवी	मुंबई
(४२)	राजश्री चोरड़िया	भूसावल
(४३)	राजू बोथरा	सूरत
(४४)	राजू नाहटा	मुंबई
(४५)	रमिला एस० गन्ना	मुंबई
(४६)	रंजना गादिया	कांचीपुरम
(४७)	रश्मि श्यामसुखा	लुधियाना
(४८)	रेखा बरलोटा	मुंबई
(४९)	रेखा कांठेड	कांचीपुरम
(५०)	रेखा संकलेचा	सूरत
(५१)	रीतू अहूजा	लुधियाना
(५२)	साधना श्यामसुखा	लुधियाना
(५३)	संगीता गुंदेचा	मुंबई
(५४)	संतोष आंचलिया	तिरुपुर
(५५)	संतोष भंसाली	सूरत
(५६)	सविता बड़ाला	मुंबई
(५७)	सीमा जैन	मुंबई
(४८)	सीमा रांका	सूरत
(५९)	सोना जैन	सूनाम
(६०)	सोनल पारिख	सूरत
(६१)	सुमन सिंघवी	दिल्ली
(६२)	सुमिता बैंगानी	मुंबई
(६३)	सुनीता बड़ाला	मुंबई
(६४)	सुनीता के० चोपड़ा	मुंबई
(६५)	सुनीता नाहटा	फरीदाबाद
(६६)	सूर्या कांता बैद	फरीदाबाद
(६७)	सुषमा पारख	दिल्ली
(६८)	वंदना मणोत	मुंबई
(६९)	विद्या कोठारी	मुंबई
(७०)	विजय मेहता	मुंबई
(७१)	विमल कोठारी	मुंबई
(७२)	यशवंती गोलेच्छा	सूरत

गहन अंधकार में सूर्य के समान थे आचार्य भिक्षु

छापर।

आचार्य भिक्षु का २९८वाँ जन्मदिवस एवं २६६वाँ बोधि दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु गहन अंधकार में सूर्य बनकर अवतरित हुए थे। वे जिस युग में जन्मे थे उस युग में धार्मिक मूल्य दिन-दिन विघटित हो रहे थे। धर्म और अधर्म में बेमेल मिलावट प्रभु महावीर की वाणी को धूमिल कर रही थी। केलवा की अंधेरी ओरी में नई दीक्षा लेकर आचार्य भिक्षु ने अपनी धर्म क्रांति का परचम फहराया। उस गहन अंधकार में जो दुर्लभ बोधि उन्हें प्राप्त हुई वह युगों-युगों तक लाखों-लाखों व्यक्तियों के जीवन को आलोकित करती रहेगी। शासनश्री ने आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना में गीत प्रस्तुत किया।

नमस्कार मामंत्र के उच्चारण के बाद प्रारंभ में तेमम की बहनों ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत समिति के संरक्षक प्रदीप सुराणा, सूरजमल नाहटा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष सरिता सुराणा, गजराज दुधोड़िया ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना मे गीत व भाषण के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। संयोजन तेरापंथ सभा चमन दुधोड़िया ने किया।

तपस्या अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन

कृष्णानगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनि नमि कुमार जी ने ३५ दिन की तपस्या की। तपस्या के उपलक्ष्य में मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि मुनि नमि कुमार जी की दीक्षा को मात्र ७ वर्ष हुए हैं, दिल्ली आए मात्र ६ महीने हुए हैं, इस अल्प समय में इन्होंने २५, २६ और ३५ दिन की बड़ी-बड़ी तपस्या करके कर्म निर्जरा के साथ धर्मसंघ की प्रभावना की है। मैं इनकी तपस्या पर मंगलकामना करता हूँ कि ये तपस्या में इसी प्रकार निरंतर आगे बढ़ते रहें और धर्मशासन की प्रभावना करते रहें। मुनिश्री ने तपस्या के वर्धापन पर दो नए गीतों का निर्माण कर संगान कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

तपस्वी मुनि नमि कुमार जी ने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति आभार ज्ञापन किया कि उनकी अनुमति मिलने से और मेरे अग्रगण्य उग्रविहारी तपोमूर्ति की सेवा भावना से ही मैं कुछ कर पाया हूँ। मुनि अमन कुमार जी के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि अमन कुमार जी ने नमि मुनि की तपस्या की अनुमोदना करते हुए स्वयं द्वारा रचित गीत का संगान कर प्रसन्नता व्यक्त की।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी अणिमाश्री जी, साध्वी कुंदनरेखा जी के उद्गार प्राप्त हुए। ओसवाल भवन, शाहदरा से साध्वी अणिमाश्री जी की सहयोगिनी साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने पधारकर मुनिश्री की सुखसाता पूछते हुए मधुर गीत का संगान किया।

मुनि नमि कमार जी के ३५ की तपस्या के उपलक्ष्य में तेयुप ने तपस्या की पचरंगी, सामायिक की नवरंगी के साथ सैकड़ों उपवास और काफी भाई-बहनों ने पौषध करके तपस्या की अनुमोदना की। पूरी दिल्ली में ३५० के लगभग उपवास हो गए। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल, राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत संघ के संचालक कुलभूषण आहूजा आदि के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए।

तपाभिनंदन समारोह का आयोजन

सिवानी।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में तपाभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष रतनलाल जैन ने तपस्वियों के तप का अभिनंदन किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर की वाणी है अहिंसा मंगल है, संयम मंगल है, तप भी मंगल है, तप से आत्मशोधन होता है। जो तत्काल पवित्र बना दे वह तप है, तपे बिना दूध से मक्खन नहीं निकलता, तपे बिना आटे की रोटी नहीं बनती, तपे बिना कुम्भकार घड़ा नहीं बना सकता। तपे बिना स्वर्ण कुंदन नहीं बन सकता। तपस्वी शुभभावों से तपस्या करे, मनोबल से आगे बढ़े, गतिमान कदमों से शिखर तक की यात्रा करे, यह तप का, ओज का, शक्ति का, आरोग्य का अभिनंदन है।

साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। सरिता बंसल एवं रेखा जैन ने गीतिका प्रस्तुत की। अमित जैन, उपासक श्यामसुखा जैन आदि ने तप की अनुमोदना में अपने विचार प्रस्तुत किए।

ऋतु जैन, गोकुल जैन, पिंकी जैन, हेमलता जैन, बलवंत जैन ने अठाई की तपस्या की।

सभा की ओर से रतनलाल जैन, अमित जैन, संजीव जैन, राजेश जैन, विनोद गोयल उमेद आदि ने तपस्वियों का साहित्य से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुमंगला जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 जुलाई - 6 अगस्त, 2023

✦ *भोजन करना बड़ी बात नहीं। भोजन न करना भी बड़ी बात नहीं। भोजन करने और न करने में विवेक रखना बड़ी बात है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

पेटलावद।

सेवा परम धर्म है यह योगियों के लिए भी दुष्कर है। महिलाओं को प्रतिदिन नया ज्ञान और तत्त्वज्ञान सीखने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। उक्त आशय के उद्गार मुनि सुव्रतकुमार जी स्वामी ने तेरापंथ महिला मंडल के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान तेरापंथ भवन में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए।

महिलाएँ परस्पर एक-दूसरे के प्रति परस्परता रखें। एक-दूसरे के प्रति प्रमोद भाव रखें और किसी भी अच्छे कार्य में पूरे संगठन को मिल-जुलकर सहयोग करना चाहिए। आपने सभी श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों की रास्ते की सेवा आदि दायित्वों के प्रति जागरूक बने रहने की प्रेरणा प्रदान की।

आपने प्रसंगवश कहा कि मोक्ष बातों से नहीं वरन प्रबल पुरुषार्थ से मिलता है। इस अवसर पर मुनि मंगलप्रकाश जी ने कहा कि तीर्थंकरों के प्रवचन सुनने मनुष्यों, तिर्यंचों के अतिरिक्त ६४ इंद्र भी आते हैं। सामान्य मनुष्यों की तुलना में तीर्थंकरों, चक्रवर्ती, वासुदेव, प्रतिवासुदेव की पुण्यायी व ऋद्धि अत्यंत ज्यादा होती है। इस अवसर पर मुनि शुभम कुमार जी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

नव मनोनीत पदाधिकारियों ने शपथ ली। तेममं के नए अध्यक्ष के रूप में अनिता भंडारी को निवर्तमान अध्यक्ष अनिता मूणत ने शपथ दिलवाई। अपनी कार्यकारिणी की घोषणा के साथ अनिता भंडारी ने पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल नव मनोनीत मंत्री मुक्त मूणत व आभार सहमंत्री मोना पटवा ने किया।

गंगाशहर।

तेममं, गंगाशहर की नवनिर्वाचित टीम ने शांति निकेतन के प्रांगण में शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में निवर्तमान अध्यक्ष ममता रांका से विधिपूर्वक शपथ ग्रहण की। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात पूर्व मंत्री कविता चोपड़ा ने सन् २०२१-२३ का मंत्र प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। निवर्तमान अध्यक्ष ममता रांका ने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में दिए गए सहयोग के लिए सबका आभार व्यक्त किया।

नव निर्वाचित अध्यक्ष संजू लालाणी ने आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। साध्वी शशि रेखा जी और साध्वी ललित कला जी ने अपनी तथा सभी साध्वियों की तरफ से नव निर्वाचित टीम को आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ और आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान से मंत्री दीपक आंचलिया, सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा, अणुव्रत समिति से अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया ने नई टीम को शुभेच्छा प्रेषित करते हुए हर संभव सहयोग की भावना प्रकट की। नव मनोनीत कन्या मंडल संयोजिका प्रिया संचेती ने सभी से निवेदन किया कि अपने घर की बेटियों को कन्या मंडल से जोड़ें। आभार मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने किया। कार्यक्रम का संयोजन संतोष बोथरा ने किया।

अररिया कोर्ट।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेममं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राजू देवी भूरा, सुशीला देवी दुधोड़िया, शांतिदेवी चंडालिया के द्वारा नवकार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात कांता बेगवानी, ब्यूटी बेगवानी, शेरोन बेगवानी, ऋतु चंडालिया एवं कविता बोथरा ने गीतिका के द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में ज्योति बोथरा ने नव मनोनीत अध्यक्ष सरिता बेगवानी को शपथ ग्रहण करवाई। नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा कर पूरी कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई।

कार्यक्रम में नेपाल, बिहार तेरापंथी सभा अध्यक्ष भेरुदान भूरा, सभा अध्यक्ष निर्मल बोथरा, सागरमल चिंडालिया, तेयुप अध्यक्ष पंकज बोथरा आदि ने अपना वक्तव्य देते हुए नव कार्यकाल हेतु मंगलकामना एवं शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम का आभार नवनियुक्त मंत्री सुरभी दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्योति बोथरा ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला मंडल, सभा, तेयुप, अणुव्रत समिति एवं ज्ञानशाला के सदस्य सक्रिय रहे।

तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

नवरंगपुरा।

मुनि डॉ० मदन जी ने सरदार पटेल भवन, नवरंगपुरा में तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर कहा कि तेरापंथ, सत्य की खोज एवं अध्यात्म का मंत्र दाता है। महामहिम भिक्षु स्वामी सत्यान्वेषी महापुरुष थे। उन्होंने सत्य को खोजा और सत्य को सभी में फैलाने का महानतम कार्य किया।

इस अवसर पर मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से भिक्षु स्वामी के पराक्रम की सराहना की। इस उपलक्ष्य में सायंकाल में अच्छी उपस्थिति के साथ धम्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भिक्षु भजन मंडली द्वारा भजन गाए गए। सभा अध्यक्ष पारस कोठारी ने अपने विचार रखे। महिला मंडल अध्यक्षा ने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने किया।

रक्तदान कैंप का आयोजन

उधना।

तेयुप, उधना द्वारा तेरापंथ भवन में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस रक्तदान कैंप में कुल १४१ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

महावीर हॉस्पिटल ब्लड बैंक डॉक्टर टीम का संपूर्ण सहयोग रहा। तेयुप से निवर्तमान अध्यक्ष सुनील चंडालिया, नवनिर्वाचित अध्यक्ष हेमंत डांगी, तेयुप सदस्य, उधना सभा, किशोर मंडल एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। नवनिर्वाचित अध्यक्ष हेमंत डांगी ने सभी रक्तदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

ई-लर्निंग प्रोजेक्ट का उद्घाटन शुभारंभ

भुवनेश्वर।

ई-लर्निंग प्रोजेक्ट के उद्घाटन समारोह का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महावीर अष्टकम् से मंगलाचरण मास्टर दर्शील बैद ने किया। सभा अध्यक्ष बच्छराज बैताला ने अतिथियों व समाज के लोगों का स्वागत किया व ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों का उत्साहवर्धन किया।

ई-लर्निंग प्रोजेक्ट उद्घाटन समारोह रणजीत सिंह बैद के सौजन्य से हुआ व उन्हीं के द्वारा लोकार्पण करवाया गया। सभा के मंत्री पारस सुराणा ने ज्ञानशाला पर अपने विचार व्यक्त किए।

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपने विचारों में भुवनेश्वर ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों व ज्ञानार्थियों की सराहना की। भुवनेश्वर ज्ञानशाला की संयोजिका नयनतारा सुखानी ने ज्ञानशाला के बच्चों की बढ़ोतरी हो और नए प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षक तैयार किए जाएँ अपने वक्तव्य में कहा।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों पर एक नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में ३२ बच्चों की उपस्थिति रही। बच्चों को शिशु संस्कार बोध का रिजल्ट सुनाया गया व प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित भी किया गया। अणुव्रत क्रिएविटी प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र, मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र बैद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका संतोष सेठिया ने किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

गुवाहाटी।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के सत्र -२०२३-२४ का शपथ विधि समारोह स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित किया गया। अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने स्वागत वक्तव्य दिया। नव मनोनीत अध्यक्ष बजरंग बैद को निवर्तमान अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव मनोनीत अध्यक्ष ने अपने पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं परामर्शकों की घोषणा की।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी के अणुव्रत आंदोलन को शिखर पर ले जाएँ, जिससे समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके। इस अवसर पर अणुविभा के असम व त्रिपुरा प्रभारी छतरसिंह चोरड़िया, तेरापंथी सभा, तेममं, तेयुप के पदाधिकारियों ने नवमनोनीत अध्यक्ष फुलाम गमछा एवं साहित्य से सम्मान किया एवं उनकी कार्यकारिणी को बधाई दी। मंच संचालन मंत्री अशोक कुमार बोरड़ ने किया।

भिक्षु ज्ञान, दर्शन, चारित्र बोधि से संपन्न थे

पर्वत पाटिया।

साध्वी हिमश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा में आचार्य भिक्षु का २९८वाँ जन्म दिवस तथा २६६वाँ बोधि दिवस के उपलक्ष्य में साध्वी हिमश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ के विशाल सुसंगठित, मर्यादित मानचित्र पर समर्पण संगठन सहिष्णुता की लकीरें खिंची। समर्पण की बुनियाद पर भिक्षु ने सुदृढ़ इमारत खड़ी की थी।

कार्यक्रम ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा भिक्षु अष्टकम् से प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी रमावती जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की जो बोधि थी वह आंतरिक विशुद्धि से प्राप्त थी।

इस अवसर पर साध्वीवृंद ने कविता एवं गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी मुक्तियशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

✦ *किसका है? यह मत देखो। क्या है? इस पर ध्यान दो। अच्छा विचार व अच्छी कृति, फिर वह किसी की भी क्यों न हो, स्वीकार कर लो।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन में ध्यान की स्थिरता लाना बेहद जरूरी

चंढ़ीगढ़।

जीवन में ध्यान की स्थिरता लाने में बहुत जरूरी है मन में स्थिरता को लाना। मन को पूरी तरह स्थिर बनाने के लिए जरूरी है कि हम अपने विचारों को अहमियत देना छोड़ दें। आप निश्चल होना तो चाहते हैं, लेकिन आप जिंदा हैं, इसलिए हमेशा हलचल में हैं, कुछ न कुछ हरकत कर रहे हैं। इस जीवन को एक खास स्तर तक की स्थिरता में लाने के लिए अपनी मानसिक गतिविधियों से खुद को पूरी तरह से अलग करना होता है। शारीरिक गतिविधि कोई समस्या नहीं है, उसे हम आसानी से स्थिर कर सकते हैं, यह मनोवैज्ञानिक ढाँचा ही है जो सक्रिय रहता है। यह शब्द मनीषी मुनि संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने कहे।

मनीषी संत ने आगे कहा कि अगर आप नहीं जानते कि आत्मसमर्पण क्या होता है तो कम से कम आज्ञाकारी बन जाइए। बिना यह कदम उठाए मन को स्थिर करना कुछ ऐसा ही है, जैसे कोई पारे को पकड़ने की कोशिश कर रहा हो।

केवल भौतिक शरीर ही सक्रिय होता है, क्योंकि स्थान या स्पेस तो अचल है, पूरी तरह से अचल और स्थिर। तीव्रता की चरम अवस्था स्थिरता ही है। अगर आप अपने भीतर इस स्थिरता का जरा भी अनुभव कर लेते हैं, तो अचानक आप पाएँगे कि आपका शरीर, मन, हरी चीज जबरदस्त उल्लास से उत्तेजित हो उठेगा। कुल मिलाकर जीवन बिलकुल अलग तरह का ही होगा।

ऊर्ध्वारोहण कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में टीपीएफ फाउंडेशन डे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'ऊर्ध्वारोहण टीपीएफ तब से अब तक' शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने कहा कि अनेक अच्छी योजनाएँ टीपीएफ के पास हैं। हैदराबाद में भी हर घर में टीपीएफ है, यानी टीपीएफ के सदस्य बनने योग्य प्रोफेशनल्स हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि टीपीएफ में ज्यादा से ज्यादा सदस्य शामिल हों।

इस कार्यक्रम में विकास परिषद सदस्य पदमचंद पटावरी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में टीपीएफ नेशनल मीडिया द्वारा टीपीएफ फाउंडेशन डे पर प्रसारित वीडियो का भी अवलोकन किया गया। टीपीएफ नेशनल टीम से नवीन सुराणा और साउथ जोन अध्यक्ष मोहित बैद ने टीपीएफ की स्थापना कैसे हुई और टीपीएफ के उद्देश्यों और योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

हैदराबाद अध्यक्ष पंकज संचेती ने सभी का स्वागत किया और टीपीएफ योजनाओं में आर्थिक अनुदान निवेदन भी किया। टीपीएफ के नेशनल आर्गेनाइजेशन चेयरमैन ऋषभ दुगड़ और टीपीएफ नॉलेज बैंक के चेयरमैन दीपक संचेती की उपस्थिति रही। टीपीएफ के सदस्यों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

सरदारशहर।

तेयुप, सरदारशहर द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों के लिए द्वि-दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी सुदर्शनाश्री जी का सान्निध्य रहा।

साध्वी पुनीतयशा जी ने बच्चों को ज्ञानवर्धक बातें बताईं एवं बच्चों को कहानी सुनाकर प्रेरित किया। शिविर में बच्चों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। ६ वर्ष से बड़े बच्चों को तीर्थंकरों के नाम पर एवं छोटे बच्चों को नमस्कार महामंत्र के रंगों पर आकर्षक व नए रूप से मेमोरी टेस्ट कंपिटीशन करवाया गया। इन सबमें विजेता प्रतिभागी बच्चों को तेयुप द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर में ४५ बच्चों ने भाग लिया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने अच्छा श्रम किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

भादरा निवासी, सूरत प्रवासी पारस-मनीषा पटावरी का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक कांतिभाई मेहता, गौतम वेदमूथा ने जैन संस्कार विधि द्वारा संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

पारस पटावरी व परिजनों ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

सूरत।

पूजा-अमित चोपड़ा व सारिका-नितेश चोपड़ा गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक विजयकांत खटेड़, मनीष कुमार मालू, विनीत सामसुखा, हिम्मत बम्ब, बजरंग बैद, अरविंद बाफना, नरेंद्र भंसाली, सतीश संकलेचा ने संपूर्ण विधि-विधान और मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपादित किया।

किशनलाल बैद ने आभार व्यक्त किया। तेयुप नव निर्वाचित अध्यक्ष सचिन चंडालिया व उपाध्यक्ष अभिनंदन गादिया ने मंगलकामना पत्र व मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

सूरत।

तारानगर निवासी, सूरत प्रवासी अरुण हीरालाल बरमेचा के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग बैद, नरेंद्र भंसाली ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

अरुण ने व उनके सभी परिजनों ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

रतलाम (म०प्र०)

रतलाम में कल्याणमल विकास भांगू के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेंद्र मेहता ने संपादित करवाया।

भांगू परिवार द्वारा परिषद के विकास हेतु अनुदान राशि भेंट की गई।

विजयनगर।

गंगाशहर निवासी, बैंगलोर प्रवासी कन्हैयालाल, प्रियेश सिंघी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक राकेश दुधेड़िया, संजय भटेवरा एवं धीरज भादानी ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपादित करवाया।

परिषद की ओर से सिंघी परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। सिंघी परिवार ने संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। जैन संस्कार विधि प्रभारी धीरज भादाणी ने आभार ज्ञापन किया।

विवाह संस्कार

श्रीगंगानगर-पीलीबंगा।

गोलूवाला निवासी रतनलाल नौलखा की सुपुत्री सुमन का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी चंपालाल बैद के संपुत्र मुलेशचंद के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विमल कोटेचा, रोहित जैन और सतीश पुगलिया ने विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

इस अवसर पर उपस्थित दोनों परिवारों की तरफ से जैन संस्कारकों का आभार व्यक्त किया गया।

✦ *ऋजुता के अभ्यास के द्वारा माया को जीतना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

(क्रमशः)

अपने विषयों के असंप्रयोग में चित्त के स्वरूप का अनुकरण जैसा करना इंद्रियों का प्रत्याहार कहलाता है। प्रत्याहार के स्थान पर जैन आयामों में प्रतिसंलीनता का उल्लेख है। औपपातिक सूत्र में इंद्रिय प्रतिसंलीनता के पाँच प्रकार बतलाए गए हैं।

इंद्रिय प्रतिसंलीनता के दो मार्ग हैं–विषय-प्रचार का निरोध और राग-द्वेष निग्रह। आँखों से न देखें, यह विषय-प्रचार का निरोध है। विषय के साथ संबंध स्थापित हो जाए, वहाँ राग-द्वेष न करना, राग-द्वेष निग्रह है। प्रतिसंलीनता का अर्थ है–अपने आप में लीन होना। इंद्रियाँ सहजतया बाहर दौड़ती हैं, उन्हें अंतर्मुखी बनाना प्रतिसंलीनता है। उसकी प्रक्रिया यह है–

कोई आकार सामने आए तो उसकी उपेक्षा कर भीतर में देखा जाए, वैसे ही भीतर से सुना जाए, सूँघा जाए, स्वाद लिया जाए और स्पर्श किया जाए। प्रतिसंलीनता के लिए कुंभक की आवश्यकता होती है। उसकी प्रक्रिया इस प्रकार है–दायें नथुने से श्वास भरें। कुछ देर रोककर अंतःकुंभक करें। फिर बायें नथुने से श्वास को बाहर निकाल दें। कुछ देर बाह्यकुंभक करें। इस प्रकार एक बार कुंभक होता है। प्रतिदिन बारह-तेरह बार इसका अभ्यास करना चाहिए।

वीर्य की उत्पत्ति समान वायु से होती है। उसका स्थान नाभि है। इसलिए कुंभक के साथ नाभि पर ध्यान करें। पूरक करते समय संकल्प करें कि वीर्य नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क में जा रहा है। संकल्प में ऐसी दृढ़ता लाएँ कि अपनी कल्पना के साथ वीर्य ऊपर चढ़ता दिखाई देने लगा। चाप में भी सहस्रार-चक्र पर ध्यान कर संकल्प करें कि नीचे खाली हो रहा है और ऊपर भर रहा है। वीर्य नीचे से ऊपर जा रहा है। ऐसा करने से वीर्य का चाप वीर्याशय पर नहीं पड़ेगा। फलतः उसकेचाप से होने वाली मानसिक उत्तेजना से सहज ही बचाव हो जाएगा। इस विषय में यौन-शास्त्रियों के अभिमत भी मननीय हैं।

विज्ञानविशारद स्कॉट हाल का मत है–अंड और डिम्ब ग्रंथियों के अंतःस्राव जब रक्त के साथ मिलकर शरीर के विभिन्न अंगों में प्रवाहित होते हैं तो वे युवक और युवती सर्वांगीण विकास में जादू की तरह नव-जीवन का प्रभाव छोड़ते हैं।

हेलेनाराइट ने इसके लिए बड़ा उपयोगी मार्ग बतलाया है–आत्मविकास के लिए कोई एक कार्य अपना लेना चाहिए और एकाग्रचित्त से दिन में कई बार यह सोचना चाहिए कि जननेन्द्रिय में केंद्रिय प्राणशक्ति सारे स्नायुमंडल में प्रवाहित होकर अंग-प्रत्यंग को पुष्ट कर रही है। थोड़े संयम में ही इस मानसिक सूचना से तन और मन नए चैतन्य से स्फूर्त एवं प्रफुल्ल हो उठेंगे।

इन साधनों के अतिरिक्त शास्त्रों का अध्ययन, मनन, चिंतन, व्युत्सर्ग आदि साधन भी मन को एकाग्र करने में सहायक होते हैं। ब्रह्मचर्य के लिए केवल मानसिक चिंतन ही पर्याप्त नहीं है, देहिक प्रश्नों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। भोजन-संबंधी विवेक और मल-शुद्धि का ज्ञान भी कम महत्त्व का नहीं है। यदि उसकी उपेक्षा की गई तो मानसिक चिंतन अकेला पड़ जाएगा।

मानसिक पवित्रता, प्रतिभा की सूक्ष्मता, धैर्य और मानसिक विकास की सिद्धि के लिए उक्त साधनों का अभ्यास आवश्यक है।

ब्रह्मचर्य का शरीरशास्त्रीय अध्ययन

शरीर-शास्त्र के अनुसार शरीर में आठ ग्रंथियाँ होती हैं–

(१) श्लैष्मिक या पीयूष (पिच्यूटरी)
(२) कंठमणि (थाइरायड)
(३) वृषण
(४) सर्वकिण्वी (पैनक्रिया)
(५) एड्रीनल या सुप्रारीनल
(६) पैराथाइरायड
(७) तृतीय नेत्र (पीनियलबॉडी)
(८) यौवनलुप्त (थाइमस)

पीयूष ग्रंथि

यह ग्रंथि दिमाग के नीचे होती है। यह थाइरायड, पैराथाइरायड, एड्रीनल, पैनक्रिया व वृषण कोशों के स्रावों को नियंत्रित करती है। इस ग्रंथि के रसों का कार्य इस प्रकार है–

प्रथम रस का कार्य–शरीर-विकास।

द्वितीय रस का कार्य–शरीर के जल या नमक का संतुलन।

तृतीय रस का कार्य–गुर्दे के कार्य का नियंत्रण।

पीयूष ग्रंथि काम कम करे तो काम-शक्ति नष्ट हो जाती है।

कंठमणि ग्रंथि

यह गर्दन में श्वास नली से जुड़ी हुई होती है। इसका आकार तितली के समान होता है। इसका रसस्राव अधिक होने पर शरीर को अधिक पोषण की जरूरत होती है। क्षुधा बढ़ जाती है किंतु अन्य अंग साथ नहीं देते, इसलिए वह कमी पूरी नहीं होती। ऐसी स्थिति में दुर्बलता आ जाती है। इस ग्रंथ से रस कम निकले तो बुढ़ापा आ जाता है, सर्दी अधिक लगती है, भूख कम हो जाती है, शिथिलता और उदासी रहती है।

वृषण ग्रंथि

यह पुरुष के ही होती है। यह अंडकोशों में होती है। इसके रसस्राव से पौरुष जागता है और दाढ़ी-मूँछें आती हैं।

पैनक्रिया ग्रंथि

यह दो आँतों के बीच में होती है।

एड्रीनल या सुप्रारीनल ग्रंथि

ये दोनों ग्रंथियाँ गुर्दे के ऊपरी हिस्से में होती है। इनके स्राव शरीर के लिए बहुत आवश्यक होते हैं। इनसे साहस मिलता है। ये स्राव यकृत की चीनी को रक्त के द्वारा मांसपेशियों में ले जाते हैं। यह मांसपेशियों को जूझने की शक्ति देती है।

पैराथाइरायड ग्रंथि

कंठमणि के पास गेहूँ के दाने के बराबर चार ग्रंथियाँ होती हैं। इन्हें पैराथाइरायड कहा जाता है। ये रक्त में कैल्शियम, फासफोरस आदि का उचित संतुलन बनाए रखती हैं।

तृतीय नेत्र ग्रंथि

यह मस्तिष्क में होती है।

यौवनलुप्त ग्रंथि

यह सीने में होती है।

इनका कार्य आज्ञा है। प्रस्तुत विषय का संबंध वृषण ग्रंथियों से है। वृषण ग्रंथियाँ दो स्राव उत्पन्न करती हैं–बहिःस्राव और अंतःस्राव। धमनियों द्वारा वृषण-ग्रंथियों में रस-रक्त आता है। उसे प्राप्त कर दोनों स्रावों के उत्पादक अपने-अपने स्राव को उत्पन्न करते हैं।

वीर्य अंडकोश में उत्पन्न होता है। उसकी दो धाराएँ हैं–एक वीर्याशय, जो मूत्राशय और मलाशय के मध्य में हैं–में जाती है। दूसरी रक्त में मिलकर शरीर में दीप्ति, मस्तिष्क में शक्ति, उत्साह आदि पैदा करती है। वीर्याशय भरा रहे तो दूसरी धारा रक्त में अधिक जाती है। यह स्थिति शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है। वीर्याशय खाली होता रहे तो वीर्य पहली धारा में इतना चला जाता है कि दूसरी को पर्याप्त रूप से मिल ही नहीं पाता। फलतः दोनों प्रकार के स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है। वीर्याशय खाली न हो, इसका ध्यान रखना स्वास्थ्य का प्रश्न है।

जीवन के दस स्थान हैं– (१) मूर्धा, (२) कंठ, (३) हृदय, (४) नाभि, (५) गुदा, (६) वस्ति, (७) ओज, (८) शुक्र, (९) शोणित, (१०) मांस।

ये दस स्थान दूसरे प्रकार से भी मिलते हैं–

१:२ दो शंख–पटपड़ियाँ

३:५ तीन मर्म-हृदय, वस्ति और सिर

६ कंठ, ७ रक्त, ८ शुक्र, ९ ओज, १० गुदा।

ओज इन दोनों प्रकारों में है। वह (वीर्य) धातु का अंतिम सार नहीं, किंतु सातों धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) का अंतिम सार है। उसका केंद्रस्थान हृदय है, फिर भी वह व्यापी है।

इससे दो बातें निसपन्न होती हैं–

(१) ओज से संबंध केवल वीर्य से नहीं है।

(२) वीर्य का स्थान अंडकोश है, जबकि ओज का स्थान हृदय है।

ओज और वीर्य में तीसरा अंतर यह है कि वीर्य का मध्यम परिणाम ही लाभप्रद होता है। वह हीन मात्रा में हो तो क्षीणता आदि दोष बढ़ते हैं। वह अति मात्रा में हो तो उससे मैथुन की प्रबल इच्छा और शुक्राश्मरी (शुक्र-जनित पथरी) रोग उत्पन्न होता है।

ओज जितना बढ़े उतना ही लाभप्रद है। उसकी वृद्धि से मन की तुष्टि, शरीर की पुष्टि और बल का उदय होता है।

वीर्य-व्यय के दो मार्ग है।–(१) जननेन्द्रिय, (२) मस्तिष्क।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३०) यो धर्मं शुद्धमाख्याति, प्रतिपूर्णमनीदृशम्।
अनीदृशस्य यत्स्थानं, तस्य जन्मकथा कुतः।।

जो शुद्ध, परिपूर्ण और अनुपम धर्म का निरूपण करता है और वह अनुपम धर्म जिसमें ठहरता है, उसके पुनर्जन्म की बात कहाँ?

(३१) आत्मगुप्तः सदा दान्तः, छिन्नस्रोता अनास्रवः।
स धर्मं शुद्धमाख्याति, प्रतिपूर्णमनीदृशम्।।

जो आत्म-गुप्त है, सदा दांत है, जिसने कर्म आने के स्रोतों को छिन्न कर दिया है और जो अनास्रव हो गया है, वह परिपूर्ण, अनुपम और शुद्ध धर्म का निरूण करता है।

यूनान के एक महान् संत से किसी ने पूछा–सबसे सरल क्या है? उसने कहा–उपदेश देना। दूसरा प्रश्न किया कि सबसे कठिन क्या है? संत ने उत्तर दिया–स्वयं को जानना। और यह बहुत ठीक है। सलाह देना, उपदेश देना–यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए सरल है। क्योंकि इसमें स्वयं को कुछ करना नहीं है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है–कोई डुबकी लगाना नहीं चाहता। साधना नहीं, भजन नहीं, विवेक-वैराग्य नहीं, दो-चार बातें सीख लीं बस, लगे लेक्चर देने। जो व्यक्ति स्वयं जिस विषय 'अ' 'आ' भी नहीं जानता वह भी दूसरों को सलाह देने में तत्पर हो जाता है। 'पिकासो' जैसे चित्रकार दुनिया में विरले हुए हैं। लेकिन लोग सलाह देने उसके पास भी पहुँच जाते थे। उसने एक 'सजेशन बाक्स'–सलाहों की पेटी बना रखी थी, जिसके नीचे कचरे की टोकरी थी। लोग आते। एक कागज पर सलाह लिखकर उस पेटी में डाल देते। पेटी के छेद से वह कागज नीचे रखी कचरे की टोकरी में चला जाता। उपदेशों के प्रभावहीन होने का कारण यह है कि व्यक्ति जैसा कहते हैं वैसा करते नहीं हैं। दूसरा कारण है–जिस विषय को स्वयं जानते नहीं हैं, उसके संबंध में कहते हैं।

एक विचारक ने लिखा है–लोग धर्म के संबंध में सुनते हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं, भाषण करते हैं। धर्म के लिए लड़ते हैं और मरते भी हैं। किंतु जीते नहीं। धर्म का जीवन में परिचय हो जाए तो फिर लड़ने और मरने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। धर्म का ह्रास उसके आत्मसात् नहीं होने के कारण ही हुआ है। धर्मग्रंथ स्वयं नहीं बोलते। वे तो अनुभवी पुरुषों के स्वर हैं, चेतना जगत् से उठे हुए शब्द हैं। उसका अर्थ चेतना जगत् में प्रवेश करके ही पाया जा सकता है।

धर्म की व्याख्या जब चैतन्य भूमि से हटकर बौद्धिक भूमिका पर आ जाती है तब धर्म शुद्ध नहीं रहता। उसका स्वरूप और कार्य एक होते हुए भी भिन्नता परिलक्षित होती है। उसका एकमात्र कारण है–अनुभूति के स्तर पर धर्म का न होना। यहाँ जो धर्म-प्रवक्ता के चार लक्षण प्रस्तुत किए हैं वे यह सूचित करते हैं कि उसे कैसा होना चाहिए, जिससे धर्म की ज्योति बुझने न पाए। तथागत कौन होते हैं–इसके संबंध में कहा है–जो जैसा कहता है वैसा करता है–वह तथागत होता है। खुद्दकनिकाय में कहा है–दूसरों को उपदेश करने से पहले पंडित अपने आपको उसके अनुरूप प्रशिक्षित कर ले जिससे कि बाद में क्लेश न उठाना पड़े। इससे यह स्पष्ट है, उपदेष्टा को केवल उपदेष्टा नहीं होना है किंतु उस उपदेश को जीना है। धर्म-प्रवक्ता को जिन चार विशिष्ट गुणों से विभूषित होना चाहिए, वे ये हैं– **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न २ : कर्म की अवस्थाओं में उदयकालीन कितनी व बंधकालीन अवस्थाएँ कितनी हैं?

उत्तर : उदयकालीन अवस्थाएँ – उदय, उदीरणा
बंधकालीन अवस्थाएँ – बंध, सत्ता, उपशम
उदय व बंध दोनों – अवशिष्ट पाँच
उदीरणा वैसे उदय में लाने की एक प्रक्रिया है।

प्रश्न ३ : बंध किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा प्रदेशों के साथ कर्म पुद्गलों का चिपकना बंध है।

प्रश्न ४ : बंध के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : बंध के चार प्रकार हैं–
(१) प्रकृति बंध – कर्मों का स्वभाव
(२) स्थिति बंध – कर्मों का कालमान
(३) अनुभाग बंध – कर्मों की फल देने की शक्ति
(४) प्रदेश बंध – कर्मों का दल संचय **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

जैन जीवनशैली

इच्छा परिमाण

जैन जीवनशैली का पाँचवाँ सूत्र है इच्छा परिमाण। अनेकांत, अहिंसा और समण संस्कृति–इन तीनों को मिलाकर जो जीवनशैली का सूत्र बनता है, नवनीत के रूप में, निचोड़ के रूप में हमारे सामने आता है–वह है इच्छा परिमाण। विषमता पैदा करती है इच्छा की अति, श्रम परांगमुखता पैदा करती है इच्छा की अति और उत्तेजना पैदा करती है इच्छा की अति। वह हिंसा को जन्म देती है और अनेकांत की जीवनशैली को विकसित नहीं होने देती। इस अति अच्छा ने जीवन को बहुत असंतुलित कर दिया है। इच्छा परिमाण जीवनशैली का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है। हम इच्छा का परिमाण करें। आखिर कहीं तो आदमी को रुकना होगा। कितना चलेगा वह? सम्राट् ने प्रसन्न होकर कहा–'जितना दूर चल सको, उतनी भूमि तुम्हें मिल जाएगी।' वह दिन भर बेतहाशा भागता रहा। जब शाम को रुका तो फिर खड़ा नहीं रह सका, गिर पड़ा और मर गया।

इच्छा की अति मृत्यु की जीवनशैली है। इच्छा पर अंकुश लगाना, उसका परिमाण करना, वैयक्तिक स्वास्थ्य का लक्षण है, सामाजिक स्वास्थ्य का लक्षण है। इच्छा के परिमाण का तात्पर्य यह नहीं है कि गृहस्थ भिखारी बन जाए, रोटी माँगकर खाएँ। यह एक गृहस्थ आदमी के लिए शोभा नहीं देता। इच्छा के अनुसार वह अपना जीवनयापन करता है, किंतु इतनी इच्छा न हो कि वह सबको निगलना चाहे और सारी संपदा को अपने पास ही देखना चाहे।

इच्छा की एक अति का समाधान है–विसर्जन। पूज्य गुरुदेव ने केरल की यात्रा में विसर्जन का सूत्र दिया था। यह एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है गृहस्थ के लिए, सामाजिक प्राणी के लिए। संग्रह और परिग्रह से उपजी विसंगतियों को मिटाने के लिए एक जीवंत सूत्र है–विसर्जन। अर्जन के साथ विसर्जन भी हो। ऐसा होता है तो फिर इच्छा पर अंकुश लग जाएगा।

समाज को बनाता और गिगाड़ता है आर्थिक ढाँचा। अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और राजनेताओं ने इस सचाई को अनेक बार प्रतिपादित किया है–अर्थ के आधार पर समाज बनता और बिगड़ता है। एक बहुत बड़ी सचाई है इस बात में। आज यह देखकर आश्चर्य होता है कि समाजवाद और साम्यवाद की बात करने वाले भी अच्छा परिमाण की बात को स्वीकार नहीं कर रहे हैं, व्यक्तिगत स्वामित्व को सीमित नहीं किया जा रहा है। जहाँ व्यक्तिगत स्वामित्व असीम होगा, इच्छा अनंत होगी, उस पर कोई नियंत्रण नहीं होगा, वहाँ समाज कभी स्वस्थ नहीं रहेगा। इस संदर्भ में आध्यात्मिक दृष्टि से सामाजिक और व्यावहारिक दृष्टि से इच्छा के परिमाण का सूत्र बहुत महत्त्वपूर्ण है।

सम्यक् आजीविका

जैन जीवनशैली का छठा सूत्र है–सम्यक् आजीविका। जीविका एक सामाजिक प्राणी के लिए आवश्यक है। जीवन निर्वाह के लिए आदमी कोई न कोई धंधा, व्यवसाय, व्यापार करेगा। किंतु जरूरी है कि आजीविका असम्यक् न हो। इस पर ध्यान देना उतना ही आवश्यक है, जितना आजीविका पर। मांस का व्यापार, अंडों का व्यापार, मदिरा का व्यापार ऐसे व्यापार हैं, जो आजीविका को सम्यक् नहीं रहने देते। जैन जीवनशैली को समझने वाला व्यक्ति इन व्यवसायों से हमेशा अपने-आपको बचाना चाहेगा। ऐसे व्यवसाय, जिनसे समाज में अपराध बढ़ते हैं, क्रूरता बढ़ती है, लूट-खसोट बढ़ती है, सम्यक् आजीविका के साधन नहीं बनते। इसलिए आजीविका के प्रश्न पर विचार करना जरूरी है।

सम्यक् आजीविका का सबसे बड़ा शत्रु है–तस्करी। शास्त्रों का व्यापार आज शायद हिंसा और आतंक को बढ़ाने में सबसे बड़ा हेतु बन रहा है। यदि शास्त्रों की खुली छूट न हो, इनकी बिक्री पर प्रतिबंध हो तो अपने आप ही आतंक कम होता है। सरेआम शास्त्रों का प्रदर्शन होते देख आम आदमी के मन में भी इनके प्रति आकर्षण जागता है और चाहे-अनचाहे वह हिंसा की दिशा में अग्रसर होता है। विकसित राष्ट्रों में वहाँ के स्कूलों के विद्यार्थी शस्त्रों से लैस होकर कक्षाओं में जाते हैं। जहाँ ऐसी मानसिकता और ऐसी स्थिति है, वहाँ अहिंसा की बात कैसे स्थापित हो सकती है? जहाँ सामान्य वाद-विवाद में भी गोली और बम का इस्तेमाल होने लग गया हो, वहाँ अहिंसा की बात ही बेमानी हो जाती है। इस स्थिति में सम्यक् आजीविका का सूत्र बहुत आवश्यक है। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 जुलाई - 6 अगस्त, 2023

✦ *अपनी आवाज को सुनने वाला, अपने आपको देखने वाला और अपना हित चाहने वाला व्यक्ति अपना मित्र होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी व शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी के चातुर्मास प्रवास का चिराग पराग जैन सुपुत्र दिनेश जैन, हंसी के निवास स्थान से विशाल रैली के रूप में प्रस्थान कर, रोहिणी तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। नारों और जयघोषों से गुंजायमान पंक्तिबद्ध रैली अभिनंदन समारोह के रूप में परिवर्तित हो गई।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि चातुर्मास अतीत को भुलाकर वर्तमान में जीकर भविष्य का निर्माण करने का समय है। यह समय जीवन के चित्र में सद्गुण की तूलिका से रंग भरने का समय है। उन्होंने कहा कि चातुर्मास में अध्यात्म के बीजों का वपन कर जीवन में सद्गुणों की त्याग-तप व धर्म की फसल उगाने का समय है। यह समय खुद की तलाश का एक अनूठा मौका है। यह स्वागत किसी व्यक्ति, वेश, पद का नहीं त्याग-संयम गुरु कृपा, गुरु भक्ति, गुरु शक्ति का है। अध्यात्म के आलोक का है।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी ने चातुर्मास के करणीय कार्यों की प्रेरणा देते हुए गीत के माध्यम से सबको भाव-विभोर कर दिया। साध्वी डॉ० सूरजयशा जी ने कहा कि हमें मनुष्य जीवन रूपी कोहिनूर हीरा मिला है, संतों के सान्निध्य में बैठकर इस हीरे की आब को और अधिक बढ़ाना है। साध्वी समाधिप्रभा जी व साध्वी ओजस्वीप्रभा जी ने कहा कि हम सब मिलकर समाज में नई चेतना लाए, जिससे समरसता का वातावरण बने।

रोहिणी सभाध्यक्ष विजय जैन ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और अतिथियों एवं श्रावक-श्राविकाओं का अभिनंदन स्वागत किया।

समाज भूषण मांगीलाल सेठिया, के०एल० जैन पटावरी, महासभा के आंचलिक प्रभारी के०के० जैन, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, मुख्य अतिथि महेंद्र गोयल, विधायक रिठाला व अमृत जैन निगम पार्षद, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष विकास चोरड़िया, दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष मंजु जैन, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, पश्चिम विहार सभाध्यक्ष सुशील जैन, मॉडट टाउन सभाध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया, शालीमार बाग सभाध्यक्ष सज्जन गिड़िया, शास्त्रीनगर सभाध्यक्ष संजय सुराणा, कल्याण परिषद से शांति जैन, ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी रतनलाल जैन अभातेममं से महिला मंडल की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी, प्रेक्षा प्रशिक्षक रमेश कांडपाल, नरपत मालू आदि ने अपने वक्तव्य दिए। ओसवाल समाज के महामंत्री राजेंद्र सिंघी आदि ने साध्वीश्री जी का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन रोहिणी सभा के कोषाध्यक्ष पराग जैन ने किया। आभार ज्ञापन रोहिणी सभा के महामंत्री राजेंद्र सिंघी ने किया।

जसोल

अहिंसा रैली के साथ शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। साध्वीश्री जी के मंगल प्रवेश पर तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल व अणुव्रत समिति की ओर से स्वागत किया गया। रैली में श्रावक-श्राविकाओं ने अणुव्रत के जयकारे लगाए। रैली बस स्टैंड रोड, अणुव्रत द्वार से रवाना होकर मुख्य मार्गों से होते हुए पुराना ओसवाल भवन पहुँची। वहाँ पर स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा कि संत-ऋषियों की यह भारत भूमि, जहाँ अनेक तपस्वी संतों ने इस धरा का गौरव बढ़ाया। नगर में संतों के आगमन से मनरूपी बसंत खिलता है। संत धरती के कल्पवृक्ष हैं, चिंतामणी रत्न के समान हैं।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। साथ ही सुंदर संवाद नाटिका की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण कार्यक्रम में सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान के अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा, शंकरलाल ढेलड़िया, भूपतराज कोठारी, शांतिलाल भंसाली, सुरेंद्र सालेचा आदि अनेक जनों ने अपने विचार व्यक्त किए। तेमम एवं कन्या मंडल द्वारा अलग-अलग सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

बालोतरा

मुनि सुमति कुमार जी का तेरापंथ भवन गौरे का चौक के न्यू तेरापंथ भवन में रैली के रूप में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। रैली में तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, टीपीएफ, अणुव्रत समिति, जेएसटीएस, अभातेयुप, अभातेममं, सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय संस्थान के पुराने व नए पदाधिकारी एवं सदस्यों ने भाग लिया।

ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, टीपीएफ के मंत्री पवन बांठिया, महिला मंडल, बालोतरा नगर परिषद अध्यक्षा सुमित्रा जैन, तेयुप अध्यक्ष रोशन बागरेचा, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, तेयुप स्वर संगम एवं किशोर मंडल, ज्ञानशाला संयोजक राजेश बाफना आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

मुनि देवार्य जी ने कहा कि गुरु कृपा से दो-दो चातुर्मास मिले हैं। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी आदि तत्त्वज्ञान एवं जानकार हैं तो आप सभी तत्त्वज्ञान एवं धर्म आराधना का लाभ लें। मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि पूज्यवरों की कृपा से तेरापंथ भवन में हम तीनों संतों का चातुर्मासिक मंगलप्रवेश सानंद हो गया है। इस अवसर पर मुनिश्री ने मुनि ताराचंद जी को विशेष तौर पर याद किया। मुनिश्री ने कहा कि बालोतरा के श्रावक-श्राविकाएँ तत्त्व ज्ञानी एवं तपस्वी हैं।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मंत्री महेंद्र वेद ने किया।

भीलवाड़ा

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने वर्ष-२०२३ के चातुर्मास हेतु कांची रिसॉर्ट से जुलूस के साथ प्रज्ञा भारती महावीर कॉलोनी, भीलवाड़ा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया।

स्वागत समारोह में शासनश्री मुनिश्री ने कहा कि पूज्य गुरुदेव के आदेशानुसार हमने भीलवाड़ा चातुर्मास के लिए प्रवेश किया है। चातुर्मास काल त्याग, तपस्या, साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल होता है। इस वर्ष चातुर्मास पाँच महीने का है। सभी लोग खूब धर्म-ध्यान की आराधना करने का प्रयास करें।

मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि भीलवाड़ा गुरुदृष्टि से हम चातुर्मास के लिए आए हैं। भीलवाड़ा बहुत बड़ा क्षेत्र है। यह धर्मनगरी के रूप में भी विख्यात है। तो यहा ज्यादा धर्म होना चाहिए। यह चातुर्मास सब दृष्टियों से सबके लिए कल्याणकारी बने। भीलवाड़ा के गौरव तपस्वी मुनि प्रतीक कुमार जी ने अपनी भावना व्यक्त की।

मुनि पदम कुमार जी और मुनि मोक्ष कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद सुभाष बहेडिया ने समस्त भीलवाड़ावासियों की ओर से मुनिप्रवरों का स्वागत किया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी ने कहा कि मैं समस्त भीलवाड़ा विधानसभा की ओर से मुनिप्रवरों का स्वागत-अभिनंदन करता हूँ।

स्वागत कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से मुनिप्रवरों का स्वागत किया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, तेममं की राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल, तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी निर्मल गोखरू सहित अनेक गणमान्यजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

तेरापंथ कन्या मंडल ने मंगलाचरण, तेममं की बहनों व भिक्षु भजन मंडली ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

प्रवेश के कार्यक्रम में भीलवाड़ा, गंगापुर, कारोई, गोढास, पिठास, पुर, राशमी, पहुना, दौलतगढ़, करेड़ा, लाछुड़ा, आसंद आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने किया।

पेटलावद

जीवन में आसक्ति बहुत बड़ा खतरा है। हम लोगों को आसक्ति छोड़ने का प्रयास करना चाहिए और चतुर्मास के इस अवसर पर जागरूकतापूर्वक भरपूर लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त उद्गार मुनि सुव्रत कुमार जी ने तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर व्यक्त किए।

आपने कहा कि जीवन बीत रहा है और इसका स्थायित्व भी नहीं है। अतः प्राप्त समय का अच्छे ढंग से सदुपयोग करें।

इस अवसर पर मुनि मंगलप्रकाश जी ने कहा कि साधु-संतों के प्रवचन सुनने से ज्ञान प्राप्त होता है और जीवन में करणीय-अकरणीय का बोध मिलता है।

संत एक ओर जहाँ स्वयं तरते हैं, वहीं दूसरों को भी तिरने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। आपने चातुर्मास में किशोर, युवाओं, कन्याओं और युवती बहनों को विशेष रूप से चतुर्मास का लाभ उठाने की प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर मुझे शुभम कुमार जी ने भी संबोधित किया। स्वागत कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों, तेरापंथ कन्या मंडल, तेममं ने गीत की प्रस्तुति दी।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज गादिया, तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी दिलीप भंडारी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला कार्यवाह आकाश चौहान, तेयुप नवमनोनीत अध्यक्ष सिद्धु कोठारी ने भी मुनिवृंद का स्वागत करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री राजेश वोरा ने किया।

कार्यक्रम में आसपास के चोखले के विभिन्न क्षेत्रों रायपुरिया, करवड़, थांदला, सारंगी, बोरी, झाबुआ, कालीदेवी, झकनावद, मेघनगर, करड़ावद, बामनिया, कतवारा, श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

इस दौरान भानशाला के बच्चों, तेरापंथ कन्या मंडल, किशोर मंडल, तेयुप, तेरापंथी सभा के सदस्यों ने मुनिवृंद की अगवानी करते हुए जुलूस के रूप में तेरापंथ भवन में प्रवेश किया।

तिरुपुर

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी का तिरुपुर तेरापंथ भवन में रैली के साथ चातुर्मासिक मंगलप्रवेश हुआ। इस अवसर पर साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि फागुन आता है, बसंती बहार लिए, सावण मेघों की मल्हार लिए आता है और संत खुशियों का त्योहार लिए आता है। साधु-संत संस्कृति के प्रतीक, परंपरा के संवाहक होते हैं, जीवनकाल के मर्मज्ञ और ज्ञान के रत्नद्वीप होते हैं।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि सूर्य का धर्म प्रकाश देना, जल का धर्म शीतलता देना, अग्नि का धर्म उष्णता प्रदान करना है, वैसे ही संत का धर्म कषाय के दलदल में घुसी आत्माओं को प्रतीति कराकर सन्मार्ग प्रदान करने का है। साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

अमरदीप एन्क्लेव से रैली प्रारंभ हुई। जयघोषों के साथ तेरापंथ भवन पदार्पण हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तिरुपुर सभा के अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने दिया। साध्वीवृंद का परिचय जितेंद्र भंसाली ने दिया। महिला मंडल की अध्यक्षा सीमा श्यामसुखा ने अपनी प्रस्तुति दी। तेयुप के अध्यक्ष सोनू डागा ने अपने विचार रखे। तेममं एवं तेयुप द्वारा सामुहिक गीतिका का संगान किया गया।

कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार ज्ञापन सभा मंत्री मनोज भंसाली ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन शांतिलाल झाबक ने किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

टापरा (जसोल)

मुनि जय कुमार जी ने कहा कि हम चंद्रमा की तरह निर्मल, सूर्य की तरह तेजस्वी और सागर की तरह गंभीर बनें, यही मनुष्य का आध्यात्मिक विकास होगा। ऐसे आध्यात्मिक विकास से परिपूर्ण मनुष्य स्वयं का कल्याण तो करेंगे ही और साथ में राष्ट्र का कल्याण भी कर पाएँगे। आज का युग भौतिक विकास का युग है। मनुष्य अपना शैक्षणिक और आर्थिक विकास कर रहा है, लेकिन उसका नैतिक विकास नहीं हो रहा है। मनुष्य के भौतिक विकास के साथ नैतिक काटर आध्यात्मिक विकास होगा, तभी यह विकास परिपूर्ण कहलाएगा।

मुनि जय कुमार जी के दीक्षा के करीब ३० साल बाद पहली बार उनका चातुर्मास प्रवास जन्म भूमि में हो रहा है। चातुर्मास प्रवेश के लिए तीनों संतों ने असाड़ा गाँव से विहार किया। टापरा कस्बे के बाहर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने संतों की अगवानी की। चातुर्मास प्रवेश के बाद मुनि जय कुमार जी ने देश भर से आए श्रद्धालुओं को संबोधित किया।

मुनि जय कुमार जी की माता कमलादेवी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तेरापंथ सभा, टापरा के अध्यक्ष कांतिलाल गेलड़ा ने भी संतों का भावभरा स्वागत किया। पचपदरा विधायक मदन प्रजापत, सिवाना के पूर्व विधायक गोपाराम मेघवाल ओर टापरा सरपंच गोपाल सिंह सहित अनेक गणमान्य लोग संतों के चातुर्मास प्रवेश कार्यक्रम में उपस्थित हुए। अंत में सुरेश गोठी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन संदीप संखलेचा ने किया।

पीलीबंगा

मुनि अमृत कुमार जी ने वर्ष २०२३ के चातुर्मास हेतु जुलूस के साथ जैन भवन, पीलीबंगा में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश किया। तत्पश्चात आयोजित स्वागत समारोह में मुनि उपशम ने कहा कि पूज्य गुरुदेव के आदेशानुसार हमने पीलीबंगा चातुर्मास के लिए प्रवेश किया। चातुर्मास काल त्याग, तपस्या, साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल होता है।

मुनि अमृत कुमार जी ने मंगलपाठ का श्रवण करते हुए कहा कि गुरुदृष्टि से हम चातुर्मास के लिए आए हैं। ये चातुर्मास सब दृष्टियों से सबके लिए कल्याणकारी बने।

स्वागत कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष हनुमान जैन ने संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से मुनिप्रवरों का स्वागत किया। तेयुप के अध्यक्ष अंजनी बोथरा ने शब्दों से, तेमम ने अपनी भावाभिव्यक्ति स्वागत गीत से प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगलाचरण में अपनी प्रस्तुति दी। सकल जैन समाज, वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाएँ, सभी संस्थाओं के पदाधिकारी, तेरापंथ किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन तेयुप से सतीश पुगलिया ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जुगराज बैद के मासखमण तप के उपलक्ष्य में मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन साधना पद्धति में तपोयोग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तप वह अग्नि है जो कर्मरूपी कचरे को भस्म करने में समर्थ है। तप आंतरिक शुद्धि का उपक्रम है। तपस्या का धर्म पहला तथा आखिरी कदम है। तप से असंभव भी संभव बन जाता है।

तप मंगलकारी व कल्याणकारी होता है। तप से शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा निर्मल बनते हैं। तप में शृंगार, लेन-देन व आडंबर नहीं करना चाहिए। तप में स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य की साधना व क्रोध विजय की साधना करनी चाहिए। जुगराज बैद ने मासखमण तप (३१ दिनों का उपवास) तपा है। उनका मनोबल दृढ़ है। उनकी श्रद्धा-भक्ति विशेष है। जुगराज ने मासखमण तप कर चातुर्मास में मासखमण तप का श्रीगणेश किया है। ये साधुवाद के पात्र हैं। बैद परिवार तपस्या में अग्रिम क्रम में है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि चातुर्मास आराधना का महत्त्वपूर्ण घटक है—तप। जुगराज बैद ने मासखमण तप कर अद्भुत हिम्मत का परिचय दिया है। बालमुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन सभा के मंत्री कमल सेठिया ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन साउथ कोलकाता, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने करते हुए तप अनुमोदना में अपने विचार वयक्त किए।

खींवकरण बैद ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए। तथा बैद परिवार की बहनों द्वारा तप अनुमोदना गीत का संगान किया। सभा द्वारा संदेश पत्र, मोमेंटो व अभिनंदन पत्र के द्वारा तपस्वी जुगराज बैद व परिवार का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

नई ऊर्जा का संचार करती है संगीत की साधना

छोटी खादू।

मानवीय चेतना के तारों को झंकृत कर नई ऊर्जा का संचार करती है संगीत की साधना। संगीत उस साधना का नाम है, जिसके सुरों की सुमधुर ताल न केवल हर व्यक्ति के दिलों-दिमाग को हमेशा ताजा रखती है, अपितु मानवीय चेतना के तारों को झंकृत कर नई ऊर्जा का संचार करती है। उक्त विचार साध्वी संघप्रभा जी ने स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित संगीत प्रतियोगिता के संदर्भ में व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि सभी प्रतियोगियों ने बहुत सुंदर प्रस्तुतिकरण किया। इस आयोजन में साध्वी प्रांशुप्रभा जी की मुख्य प्रेरणा रही। उन्होंने प्रातःकालीन कार्यक्रम में जहाँ संचालन किया वहीं रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने संचालन किया। कार्यक्रम में कुल ग्यारह प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिसमें प्रथम स्थान विकास सेठिया ने, द्वितीय स्थान चंचल जोशी ने एवं तृतीय स्थान अनिल कोचर ने प्राप्त किया। सभा अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक का दायित्व निभाते हुए अध्यापक कुलदीप राखेचा ने भी भजन की प्रस्तुति दी। टाइम मार्किंग में प्रदीप भंडारी ने एवं अन्य व्यवस्थाओं में मुकेश सैन ने सहयोग प्रदान किया। नवनिर्वाचित तेयुप के अध्यक्ष विनीत भंडारी ने निर्णायक महोदय का साहित्य भेंट करके स्वागत किया। भूतपूर्व अध्यक्ष किरणचंद भंडारी, संगीत विशेषज्ञ प्राध्यापक पवन जोशी सहित सभी उपस्थित लोगों ने कार्यक्रम की प्रशंसा की।

'आओ जानें जैनत्व को' कार्यशाला का आयोजन

ओसवाल गार्डन, चेन्नई।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेमम के तत्त्वावधान में 'आओ जानें जैनत्व को' कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने जैनत्व विषय पर प्रकाश डालते हुए नव तत्त्व की परिभाषा को प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारा ध्यान अजीव की तरफ है। हमें मोक्ष की तरफ होना है। राग-द्वेष को कम करें तो मोक्ष की तरफ आगे बढ़ेंगे। अव्रत से व्रत की तरफ आना है। हमारा आध्यात्मिक विकास प्रयोग करने से होगा। उपाय करने से जैनत्व सुरक्षित रह सकता है।

साध्वी सिद्धांतश्री जी ने जैनत्व के विषय पर जानकारी दी। कार्यशाला में उपस्थित सभी बहनों का स्वागत अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में एवं व्यवस्था प्रदान करने में ओसवाल गार्डन के भाई-बहनों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

वापी।

तेरापंथ भवन, वापी में तेयुप का शपथ ग्रहण का आयोजन हुआ।

निवर्तमान अध्यक्ष विजय बोथरा ने वर्तमान अध्यक्ष मुकेश वागरेचा को शपथ दिलाई। तेयुप वापी के शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी ने समस्त कार्यकारिणी को शपथ दिलाई।

इस शपथ ग्रहण विधि को संपादित करने हेतु जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय सहप्रभारी संजय भंडारी, संस्कारक कुलदीप कोठारी एवं संस्कारक श्रेयांस कच्छारा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महासभा सदस्य रमेश कोठारी, सभा अध्यक्ष महेंद्र मेहता, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष श्रीचंद दुगड़, अभातेयुप से वापी शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी, भामाशाह राजेश दुगड़, तेयुप अध्यक्ष मुकेश वागरेचा सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन ललित दुगड़ ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

सैंथिया।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में सैंथिया तेयुप के सत्र-२०२३-२४ के कार्यकाल का नई कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन, कोलकाता में आयोजित हुआ। सैंथिया के प्रभारी तथा अभातेयुप के सदस्य अजय पिंचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। निवर्तमान अध्यक्ष अंकित बोथरा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़ को शपथ दिलाई। जिसके पश्चात अभिषेक छाजेड़ ने अपनी नई टीम की घोषणा की और उनको शपथ दिलवाई।

अभिषेक छाजेड़ ने कहा कि तेयुप जैसी गौरवशाली संस्था का अध्यक्ष बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है और आने वाले वर्ष में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने का लक्ष्य रखा। उपाध्यक्ष मोहित सुराणा ने नवनिर्वाचित टीम के साथ मुनिश्री के समक्ष गीत प्रस्तुत किया। नई टीम को मुनिश्री ने आशीर्वाद मंत्र से वर्धापित किया।

✦ *पद पर आकर व्यक्ति अगर अच्छा कार्य करता है तो पद शृंगार है, उपहार है, हार है। वरना वह भार है, धिक्कार है, निस्सार है।*

✦ *जो व्यक्ति अपने प्रति जागरूक नहीं रहता, प्रमाद में लगा रहता है, उसे पग-पग पर भय का सामना करना पड़ता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *जिसे किसी का भय नहीं होता, वही वास्तव में वीर होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

मालवीय नगर, जयपुर

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में तेयुप, जयपुर द्वारा अणुविभा के प्रांगण में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन हुआ। ज्ञानार्थियों ने सामुहिक संगान ज्ञानशाला गीत के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि ज्ञानशाला बाल पीढ़ी में अच्छे संस्कारों के निर्माण की शाला है। अनुशासन, विनम्रता, ज्ञान, जैन सद्गुणों का विकास ज्ञानशाला व संतों के संपर्क से संभव है। नमस्कार महामंत्र के महत्त्व एवं प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए साध्वीश्री जी ने ज्ञानार्थियों को नवकार मंत्र, जाप, मांसाहार, व्यसन व अपशब्द वर्जन, गुरुजनों का विनय करना आदि संकल्प दिलाए।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि बच्चे समाज की नींव होते हैं, इसलिए उनका संस्कारी, सुशिक्षित व शालीन होना जरूरी है। ज्ञानशाला इसका श्रेष्ठ उपक्रम है। नमस्कार महामंत्र द्वारा अपनी व परिवार की सुरक्षा हेतु महामंत्र से सुरक्षा कवच बनाने का आध्यात्मिक प्रयोग कराया।

कनक आंचलिया ने नौ की तपस्या, ज्ञानार्थी जिया छाजेड़ व सविता सेठिया के अठाई तप की अनुमोदना में साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने सामुहिक गीतिका द्वारा सुमधुर प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी वैभव व ओजस संचेती ने मंत्र दीक्षा गीत, सिया बरड़िया ने सोलह सती स्तवन तथा निश्चय बरड़िया ने गुरुदेव पर भावपूर्ण गीत द्वारा मनमोहक प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी श्रेयांस बोथरा ने मुक्तक, गौरवी बरड़िया ने वक्तव्य व अर्णव नेनावटी ने नमस्कार महामंत्र के प्रभाव एवं परिणाम पर अपने विचार व्यक्त किए।

तेयुप कोषाध्यक्ष ऋषिकेश बोथरा ने आभार ज्ञापन किया। तेयुप कार्यकर्ता सौरभ जैन ने मंच का संचालन किया।

रायपुर

तेयुप, रायपुर द्वारा तेरापंथी सभा द्वारा संचालित रायपुर ज्ञानशाला के सहयोग से मंत्र दीक्षा का आयोजन समणी निर्देशिका डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी डॉ० मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हुआ।

मंत्र दीक्षा के आयोजन में रायपुर ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, मनीष नाहर द्वारा गीतिका का संगान किया गया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा मंत्र दीक्षा पर आधारित शिक्षाप्रद नृत्य नाटिका के साथ अनेक रोचक नाट्य का मंचन/प्रस्तुति दी गई।

समणी निर्देशिका डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी ने मंत्र का महत्त्व समझाते हुए ६ से १२ वर्ष के बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई। समणी डॉ० मानसप्रज्ञा जी ने उपस्थित बच्चों को मंत्र दीक्षा पर आधारित प्रश्न पूछकर उनके ज्ञान का विकास किया। संचालन गौरव दुगड़ व आभार गौतम गुलगुलिया द्वारा प्रस्तुत किया गया। आयोजन में विशेष रूप से अभातेयुप से तेयुप रायपुर शाखा प्रभारी अभिषेक जैन उपस्थित थे।

इचलकरंजी

तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। तेयुप के अध्यक्ष विनोद भंसाली ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी का स्वागत किया एवं मंत्र दीक्षा के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

ज्ञानशाला संयोजिका भारती देवी संकलेचा ने बच्चों को मंत्र दीक्षा एवं ज्ञानशाला की उपयोगिता के बारे में बताया। ज्ञानार्थियों को त्रिपदी वंदना एवं गुरु वंदना करवाई।

भारती देवी संकलेचा ने ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा का महत्त्व समझाते हुए दीक्षा प्रदान की। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रजनी देवी पारख ने सभी बच्चों को नमस्कार महामंत्र पर आधारित कहानी सुनाई।

कुल ३४ बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। कार्यक्रम का संयोजन गौरव गिड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री संतोष भंसाली ने किया।

गुवाहाटी

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में तेयुप द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप साथियों के मंगलाचरण से हुआ।

तेयुप, गुवाहाटी के निवर्तमान अध्यक्ष मनीष सिंधी ने अपने वक्तव्य में सभी बच्चों को मंत्र दीक्षा लेने एवं अपनी जिंदगी में अपनाने के लिए प्रोत्साहन दिया। कार्यक्रम में गुवाहाटी ज्ञानशाला जीएस रोड और रिहाबाड़ी शाखा के एक मंचन 'ज्ञानशाला कटघरे में' प्रस्तुति दी। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने ६० बच्चों को मंत्र दीक्षा का श्रवण करवाया एवं सभी बच्चों एवं समाज को प्रेरणा पाथेय दिया। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान मंत्री विकास झाबक ने दिया।

अहमदाबाद

तेरापंथ भवन में मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में तीन ज्ञानशालाओं (शाहीबाग, ओर्चिड व जय मंगल सोसायटी) का सामूहिक मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। कुल १७५ बच्चों की उपस्थिति रही, जिसमें से ४४ बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।

स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना ने दिया। मुनिश्री ने बच्चों को अनुशासन व नमस्कार मंत्र के जप कैसे करें व साथ ही साथ जीवन में संकल्पों का महत्त्व बताते हुए मंत्र दीक्षा के संकल्प करवाए।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में संयोजक विपुल कोठारी, दिलीप बोहरा, मुकेश श्रीमाल एवं कार्यकर्ता भरत कोठारी, रवि बालड़ का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री तेयुप अहमदाबाद कुलदीप नवलखा ने किया।

नवरंगपुरा

सरदार पटेल स्मारक भवन में मुनि डॉ० मदन कुमार जी के सान्निध्य में नवरंगपुरा, ज्ञानशाला के कुल ८३ बच्चों की उपस्थिति रही, जिसमें से ३० बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण से हुई। स्वागत वक्तव्य वैभव कोठारी ने किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका चांद छाजेड़ ने अपने विचार रखे। तत्पश्चात मुनि डॉ० मदन कुमार जी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई एवं नमस्कार महामंत्र व संकल्पों के बारे में समझाया।

आभार ज्ञापन संयोजक अभिषेक छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम में सोहनराज चोपड़ा, तेरापंथी सभा-पश्चिम अहमदाबाद अध्यक्ष पारस कोठारी, अभातेयुप सदस्य अपूर्व मोदी, तेयुप सहमंत्री अतुल सिंघवी, निरंजन गंग व अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

कांकरिया-मणिनगर

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में कांकरिया-मणिनगर ज्ञानशाला के कुल ४८ बच्चों की उपस्थिति रही, जिसमें २५ बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात साध्वीश्री जी ने बच्चों को नमस्कार महामंत्र के बारे में समझाया। और बच्चों में बचपन से ही कैसे हम संस्कारों का निर्माण कर सकते हैं और उसके महत्त्व के बारे में बताया।

स्वागत वक्तव्य तेयुप उपाध्यक्ष पंकज घीया ने दिया। कार्यक्रम में सभा के मंत्री नलिन दुगड़, तात्कालिक निवर्तमान अध्यक्ष रायचंद लुणिया अनेक पदाधिकारी, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में संयोजक संयम चोरड़िया एवं कार्यकर्ता विनोद रांका का विशेष श्रम रहा।

पापविनाशक भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान

ग्रीन पार्क, दक्षिण दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में 'पापविनाशक भक्तामर स्तोत्र का मंगलमय अनुष्ठान' किया गया। साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग द्वारा रचित, आद्य प्रभु ऋषभदेव के श्रीचरणों में गहन समर्पण से उद्भूत यह स्तोत्र महाप्रभावकारी है। दुखों का आलय इस संसार में इस स्तोत्र द्वारा आधि, व्याधि और उपाधि का शमन कर समाधि में प्रवेश किया जा सकता है।

वर्तमान में लाखों-लाखों जन चेतनाएँ 'भक्तामर स्तोत्र' का प्रतिदिन संगान करती हैं। कई अजैन भक्तों ने परमनिष्ठा के साथ इस स्तोत्र की साधना पर अनेकों का उपचार किया है, कर रहे हैं। तेयुप, दिल्ली हर वर्ष साधु-साध्वियों के सान्निध्य में अनुष्ठान करवाती है और सैकड़ों श्रावक इससे लाभान्वित होते हैं।

तेयुप के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। तेयुप मंत्री अमित डूंगरवाल ने अपने संगठन की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। दक्षिण दिल्ली अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, मंत्री यश बरमेचा ने तेयुप को धन्यवाद दिया। तेरापंथ सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कार्यक्रम की सराहना की।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी, साध्वी सौभाग्ययशा जी, साध्वी कल्याणयशा जी एवं साध्वी कर्तव्ययशा जी द्वारा भक्तामर स्तोत्र का शुद्ध उच्चारण एवं उनके अंतर्गत मंत्र-रिद्धि आदि बीजयंत्रों का स्पष्ट उच्चारण कर सारी परिषद में सुंदर कवच का निर्माण किया।

इस अवसर पर लगभग १० जोड़े एवं अन्य अनेकों एकल भाई-बहनों ने उत्साह से भाग लिया अर्थात् साधिक २०० भाई-बहनों की उपस्थिति रही। तेयुप, दिल्ली की ओर से साउथ-दिल्ली संयोजक करण सेठिया ने आभार ज्ञापन किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेमम के तत्त्वावधान में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व मंत्री दीपिका फूलफगर के द्वारा प्रेरणा गीत से किया गया। निवर्तमान अध्यक्षा नयना पारख ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष लता कोठारी को शपथ दिलाई एवं नवमनोनीत अध्यक्षा लता कोठारी ने अपनी पूरी टीम की घोषणा कर उनको शपथ दिलाई।

तेमम की निवर्तमान अध्यक्ष नैना पारख ने पिछले २ साल में तेमम, मदुरै के द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी दी और सभी से उनके कार्यकाल में भूल के लिए पूरी टीम की तरफ से खमतखामणा किया।

तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला, तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा ने महिला मंडल के पिछले २ वर्ष के स्वर्णिम कार्यकाल के लिए बधाई दी एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की तथा नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उसकी टीम को भी सभी ने बधाई दी एवं शुभकामनाएँ दी। नितेश कोठारी, अमृतलाल चोपड़ा, राजकुमार नाहटा आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पूर्व मंत्री दीपिका फुलफगर ने किया। अंत में सभी का आभार ज्ञापन बबीता लोढ़ा ने किया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

तेयुप, दिल्ली प्रबंध मंडल द्वारा सत्र-२०२३-२४ की नवगठित कार्यसमिति के आयाम प्रभारी एवं क्षेत्रीय संयोजक व सह-संयोजकों के दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन तेयुप भवन, शास्त्रीनगर में किया गया। कार्यशाला युवा सदस्यों के लिए एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी गतिविधि थी, जो उन्हें संगठन के कार्यकलापों और धार्मिक दृष्टिकोण के बारे में अधिक जागरूक बनाने का मकसद रखती थी।

नमस्कार महामंत्र व विजय गीत के सामुहिक संगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन निवर्तमान अध्यक्ष विकास सुराणा द्वारा किया गया।

अध्यक्ष विकास चोरड़िया ने कार्यशाला में पधारे नव मनोनीत प्रभारियों एवं संयोजकों का स्वागत करते हुए सभी को कृतित्व एवं दायित्व का भान कराया। अपने वक्तव्य के दौरान अध्यक्ष द्वारा सदस्यों को विभिन्न धार्मिक मुद्दों, संगठन के संबंधित दायित्वों और सेवा-भावना के महत्त्व के बारे में अवधारणाएँ समझाई गई।

निवर्तमान अध्यक्ष विकास सुराणा ने अपने अनुभवों को साझा कर उपस्थित सदस्यों की जिज्ञासाओं का निराकरण किया। जिनसे सदस्यों को आपसी सहयोग, विचार-विनिमय और समस्याओं के समाधान में नव दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।

उपाध्यक्ष राकेश बैंगानी द्वारा उपस्थित सदस्यों को परिषद की गतिविधियों में भागीदारी करने का महत्त्व भी बताया गया।

कार्यशाला के अंतर्गत मुख्य वक्ता पूर्व मंत्री तेयुप-दिल्ली इंद्र बैंगानी ने सदस्यों को समय-प्रबंधन, संगठन कौशल और समाज के लिए योजनाबद्धता के महत्त्व के बारे में सिखाया गया। उन्हें आत्मविश्वास को बढ़ाने और समस्याओं का समाधान करने के लिए सकारात्मक मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया।

समर्पित युवाओं के प्रयासों के फलस्वरूप, तेयुप, दिल्ली कार्यसमिति ने इसी तरीके से से बढ़ने का संकल्प लिया और धार्मिक विचारधारा और सेवा-भावना के माध्यम से समाज के उत्थान में योगदान करने का संकल्प लिया। मंत्री अमित डूंगरवाल ने कार्यशाला संभागी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत आचार्य भिक्षु का २९८वाँ जन्म दिवस व २६४वाँ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रियायती शुल्क पर विटामिन बी-१२ एवं रीनल फंक्शन जाँच समायोजित किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से किया गया। कुल ५२ सदस्य लाभान्वित हुए।

तेयुप सदस्यों द्वारा उपस्थित जनमानस को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं के बारे में स्थानीय लोगों को जानकारी प्रदान की गई। शिविर को आयोजन करने में एटीडीसी स्टाफ पवन, स्मिता, अशेव्या, तेयुप के अध्यक्ष कमलेश गन्ना, विनर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, राजेश पोरवाड़, जयंतीलाल गांधी एवं राजेश देरासरिया ने सेवाएँ प्रदान की।

प्रतिक्रमण कार्यशाला व उपासकों की प्रवेश परीक्षा

कृष्णानगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में प्रतिक्रमण कार्यशाला आयोजित की गई। मुनिश्री ने प्रतिक्रमण विषयक गीत का संगान करते हुए प्रतिक्रमण का महत्त्व बताते हुए पाँच प्रकार के प्रतिक्रमणों की व्याख्या की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश शामसुखा ने सरल शैली में प्रतिक्रमण की पाटियों का उच्चारण अर्थ समझाते हुए ९९ अतिचारों को विस्तार से समझाया।

स्वामीजी के तेरस होने के कारण काफी लोगों ने उपवास का प्रत्याख्यान किया। मुनिश्री ने कहा कि तपस्या आत्मशुद्धि, कर्म निजरा के लिए करनी चाहिए। वनिता की तपस्या आडंबरमुक्त और साधनायुक्त है। तीन माह तक प्रतिदिन १३ माला ओम भिक्षु जय भिक्षु की, तीन महीने निरंतर फेरने से सवा लाख का जाप हो सकता है।

उपासक श्रेणी में भाग लेने वाले भाई-बहनों की लिखित परीक्षा सूर्यप्रकाश सामसुखा ने ली, सभी का उत्साह प्रशंसनीय रहा।

सूर्यप्रकाश सामसुखा का साहित्य से सम्मान जीतमल चोरड़िया, कमल गांधी, भूपेंद्र सिंघवी, मनोज सुराणा, प्रेम छल्लानी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन हेमराज राखेचा ने किया। कार्यक्रम में तेयुप के परिषद के अध्यक्ष विकास चोरड़िया, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू सोनी सहित काफी महानुभावों ने कार्यक्रम की प्रशंसा की।

✦ *अतिचारों के बिना जो धार्मिक क्रिया की जाती है, वह धार्मिकी आराधना होती है। प्रवचन करना और प्रवचन श्रवण करना दोनों धार्मिकी आराधना के उपक्रम हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

हेल्थ क्लब का शुभारंभ

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत देश के प्रथम 'हेल्थ क्लब' का विजयनगर में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से शुभारंभ हुआ। तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरना ने पधारे हुए सभी अतिथियों और श्रावक समाज का स्वागत किया। मुनि दीप कुमार जी ने युवकों को योग और सही जीवनशैली द्वारा स्वस्थ रहते हुए अध्यात्म से जुड़े रहने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने इसे युवाओं के स्वस्थ जीवन हेतु नए अध्याय की शुरुआत बताया। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, परिषद प्रभारी सोनू डागा, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु गादिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम के संचालन में फिट युवा-हिट युवा संयोजक श्रेयांस सेठिया, सह-संयोजक सुशील गांधी, कमलेश दक का अथक श्रम रहा।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, परिषदों के पदाधिकारी, उद्घाटनकर्ता परिवार मनोहर लाल, राकेश, बाबेल, तेयुप पूर्व अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, महेंद्र टेबा, दिनेश मरोठी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। आभार उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

मंत्र दीक्षा एवं शपथ ग्रहण समारोह

फरीदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशानुसार मंत्र दीक्षा एवं तेयुप की नवनिर्वाचित टीम का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ।

तेयुप के नव मनोनीत अध्यक्ष गौतम गोलछा व उनकी नवगठित कार्यकारिणी टीम के साथ-साथ तेमम की नव मनोनीत अध्यक्ष ललिता बैद व उनकी नवगठित कार्यकारिणी टीम का भी शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण द्वारा हुआ।

तेयुप के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। कार्यकारिणी सदस्य व संस्कारक जितेंद्र लुनिया द्वारा मंच संचालन किया गया। उपासिका व ज्ञानशाला प्रमुख प्रशिक्षिका मंजु लुनिया एवं सुशीला दुगड़ द्वारा १० ज्ञानशाला विद्यार्थियों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई।

मंत्र दीक्षा के पश्चात गौतम गोलछा ने २०२३-२४ के कार्यकाल के लिए अध्यक्ष पद की शपथ निवर्तमान अध्यक्ष विवेक बैद व फरीदाबाद शाखा प्रभारी जतन श्यामसखा द्वारा दिलवाई गई। इसके पश्चात गौतम गोलछा ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की उन्हें शपथ दिलवाई।

कार्यक्रम में फरीदाबाद सभा अध्यक्ष गुलाब बैद, मंत्री संजीव बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष इंद्रचंद जैन, टीपीएफ नॉर्थ जोन अध्यक्ष विजय नाहटा, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सेठिया, अभातेयुप सदस्य राजेश जैन व समाज के वरिष्ठ श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे।

धर्मसंघ व संगठन के प्रति सेवा...

(पेज १२ का शेष)

नए शैक्ष साधु की संभाल तरीके से हो। इन प्रसंगों से हमें दो प्रेरणा मिलती है। एक तो हम संघ की सेवा करने का प्रयास करें। संगठन में दरार न डालें। सेवा करने से डरें नहीं उचित अपेक्षा अनुसार साधुओं की सेवा करें। हमारे पूर्वाचार्यों ने धर्मसंघ की बहुत सेवा की है, हमारे में भी सेवा करने का विकास हो।

कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने मेवाड़ के विषय मार्ग से पूज्य कालूगणी के उदयपुर की ओर विहार के प्रसंग को समझाया। मेवाड़ के लोग पूज्यप्रवर के दर्शन करने आ रहे हैं। जेठ माह में गर्मी का भी प्रकोप है।

वीणा मेहता ने ३० की एवं मीठालाल बरलोटा ने २२ की तपस्या के पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
31 जुलाई - 6 अगस्त, 2023

✦ *समितियाँ, गुप्तियाँ शुद्ध रहती हैं तो महाव्रतों की रक्षा अच्छी हो सकती है। यदि समितियाँ-गुप्तियाँ मलिन होती हैं, खंडित होती हैं तो महाव्रत भी कुछ शिथिल हो सकते हैं।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

२१ रंगी तपस्या के सामूहिक प्रत्याख्यान

प्रत्यनीक से बचने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), २१ जुलाई, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, भिक्षु के प्रतिरूप, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र के ८वें शतक की विवेचना करते हुए फरमाया कि चार गतियाँ होती हैं–नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव। पाँचवीं गति सिद्ध गति होती है। संसारी जीव इन चारों गतियों में भ्रमण करते हैं कोई-कोई जीव तो तिर्यंच गति के वनस्पतिकाय के अव्यवहार राशि से ही बाहर नहीं निकले हैं।

यहाँ गति के संदर्भ में प्रत्यनीक तीन प्रकार के होते हैं–इहलोक, परलोक, उभयलोक प्रत्यनीक। मनुष्य जीवन का प्रत्यनीक वह होता है, जो अज्ञानपूर्वक तप करता है, वह इहलोक प्रत्यनीक होता है। पंचाग्नि तप में निर्जरा के साथ हिंसा भी होती है। यहाँ तो मनुष्य जीवन है, पर जो अगले जीवन का बैरी होता है। जैसे जो इंद्रिय-विषय में आसक्त रहता है, वह परलोक प्रत्यनीक होता है। अनेक प्रकार से वह हिंसा करता है। व्यसनों व मांसाहार का सेवन करता है। धर्म-संयम की चेतना नहीं है।

वर्तमान में जो हमें सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं, वह तो पूर्व के पुण्य की कमाई है। आगे की भी चिंता करें। कुछ धर्म कमाई करें। हमें तो मोक्ष चाहिए उसके लिए तपस्या-संयम की साधना करें। उभयलोक प्रत्यनीक इस जीवन और परलोक दोनों का प्रत्यनीक होता है। जैसे चोरी आदि किया, सुख-सुविधा भोगी पर धर्म-ध्यान नहीं किया तो इहलोक और परलोक दोनों का दुश्मन हो जाता है।

भगवती सूत्र के इस प्रसंग से हम प्रेरणा लें कि हम इहलोक, परलोक या उभय-लोक प्रत्यनीक न बने। संयममय जीवन हो, ज्ञानपूर्वक तपस्या करें, सम्यक् दर्शन हो। जीवन में नैतिकता, ईमानदारी हो। व्यक्तिगत जीवन में सादगी रहे। उम्र की तरफ ध्यान देकर जीवन में मोड़ लें। साधु का-सा जीवन जीने का प्रयास करें। संसार से निवृत्ति लेने का प्रयास करें। साधना की ओर आगे बढ़ें।

कालू यशोविलास की सुंदर विवेचना करते हुए परम पावन ने पूज्य कालूगणी को घुटने में हुई तकलीफ के प्रसंग को विस्तार से समझाया। कालूगणी महाबली पुरुष थे। पूज्यप्रवर ने २१ रंगी तपस्या के अंगभूत तपस्वियों को वृहद् मंगलपाठ के साथ प्रत्याख्यान करवाए। पारसमल बोथरा ने ३७ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दूसरों के सत्त्व का हरण करना निंदनीय, हेय कार्य माना गया है। यह अदत्तादान पाप है। गृहस्थ स्थूल अदत्तादान से बच सकता है। जैन साधु के लिए तो सूक्ष्म अदत्तादान का भी त्याग होता है। लोक दंड व राज दंड स्थूल अदत्तादान होता है। अनेक कारणों से व्यक्ति चोरी कर लेता है, उसे अच्छा भी मानता है। अदत्तादान से भारी कर्मों का बंध हो सकता है। इहलोक-परलोक बिगड़ते हैं।

२५ बोल की पुस्तक जो साध्वी जिनप्रभा जी ने लिखी थी उसका अंग्रेजी संस्करण Key of Jain Fundamental जैन विश्व भारती द्वारा पूज्यप्रवर को अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए प्रेरणा प्रदान करवाई।

पूज्यप्रवर से हीनल सिंघवी ने ३१ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बारह व्रतों को समझाया।

इक्कीस रंगी तपोमहायज्ञ के तपस्वियों को वृहद मंगलपाठ

धर्मसंघ व संगठन के प्रति सेवा भाव हो : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन (मुंबई), २२ जुलाई, २०२३

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातः लगभग ७ बजकर १० मिनट पर इक्कीस रंगी के अंगभूत तपस्वियों को पारणे से पूर्व वृहद् मंगलपाठ की कृपा तीर्थंकर समवसरण में कराई। पूज्यप्रवर ने तप की महिमा को समझाते हुए फरमाया कि कुछ समय पहले २१ रंगी तप करवाने का चिंतन चला था। तब श्रावक समाज ने २१ रंगी तप की क्रियान्विति भी कर दी। आज वह संपूर्णता की ओर है। अब आगे बढ़ने वाले और आगे बढ़ सकते हैं। परम पावन ने आगे तपस्या में बढ़ने वालों को प्रत्याख्यान करवाए। साधु-साध्वी समाज में भी बड़ी तपस्याएँ चल रही हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या समबुद्धयशा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने भी तप की महिमा को समझाया। साध्वीवृंद ने समूह रूप में मुंबई में हुई २१ रंगी तपस्या पर गीत की प्रस्तुति दी।

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तीर्थंकर समवसरण में भगवती सूत्र के ८वें शतक की व्याख्या करते हुए फरमाया कि प्रत्यनीक अनेक रूप में हो सकता है। संगठन के लिए भी आदमी प्रतिकूल व्यवहार करने वाला हो सकता है। गण एक संगठन होता है। संगठन में विघटन करने का प्रयास, बाधा डालने का प्रयास करता है, वह संगठन का प्रत्यनीक बन जाता है। ऐसा करना उसकी आत्मा के लिए एवं व्यवहार में भी अहितकर हो सकता है।

समूह के रूप में कुल प्रत्यनीक, गण प्रत्यनीक व संगठन प्रत्यनीक होते हैं। हम संगठन की सेवा कर उसे मजबूती देने में अपना प्रयास करें। अनुकंपनीय के संदर्भ में प्रत्यनीक हो सकते हैं। तेजस्वी, वृहद या बीमार व शैक्ष सेवा लेने वाले अनुकंपनीय होते हैं। इनकी सेवा न करने वाला अनुकंपनीय प्रत्यनीक हो जाता है। संगठन में सेवा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे संगठन की मजबूती होती है।

प्राणियों में परस्पर सहयोग की भावना हो। छः द्रव्य सबको सहयोग देते हैं। कोई सहयोग न करे तो वह प्रत्यनीक हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**